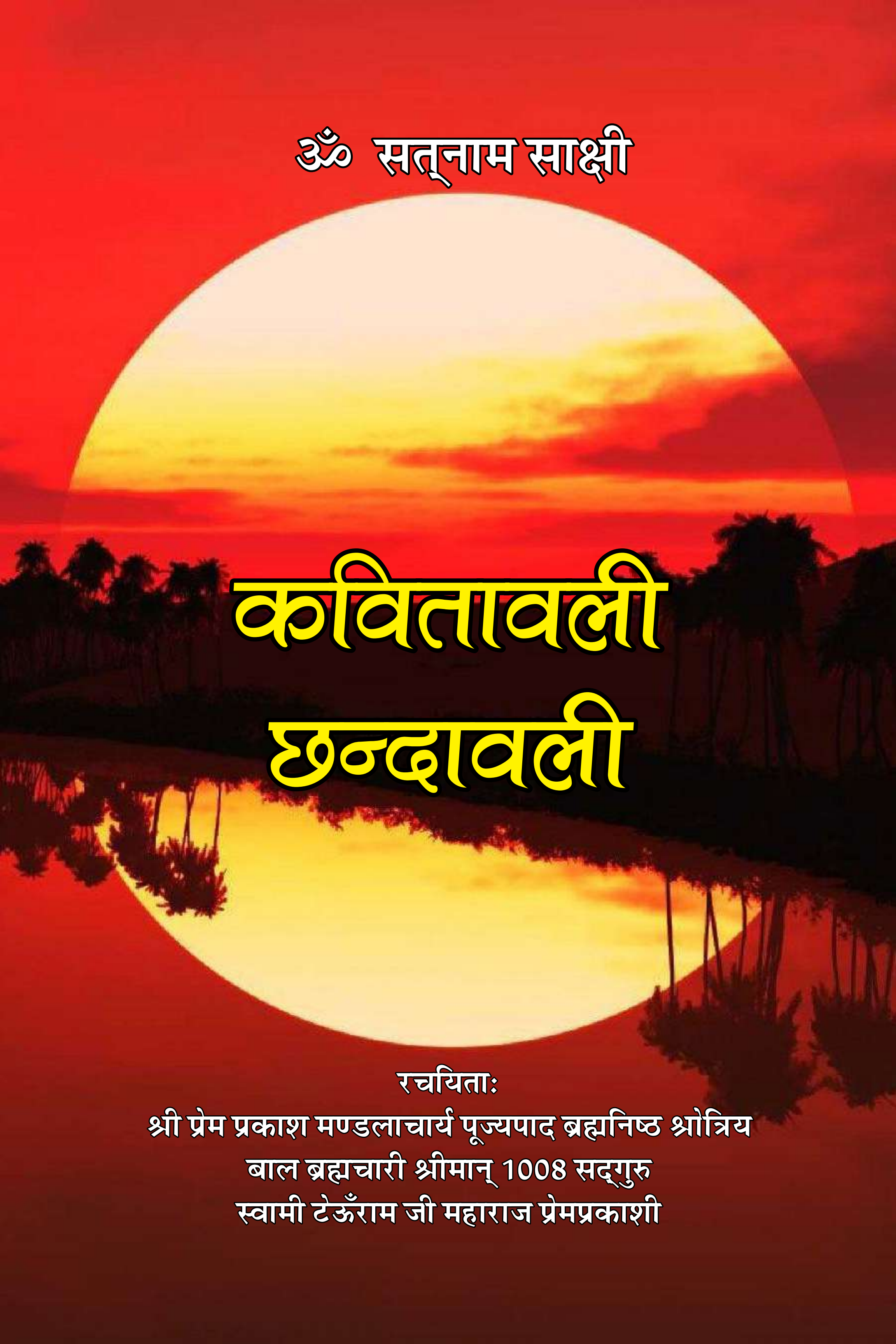

ॐ सत्नाम साक्षी

कवितावली छन्दावली

रचयिता:
श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाचार्य पूज्यपाद ब्रह्मनिष्ठ श्रोत्रिय
बाल ब्रह्मचारी श्रीमान् 1008 सद्गुरु
स्वामी टेऊँराम जी महाराज प्रेमप्रकाशी

ॐ

सतनाम साक्षी

नमः टेऊँरामाय

नमः सर्वानन्दाय

कवितावली छन्दावली

रचयिताः

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाचार्य पूज्यपाद ब्रह्मनिष्ठ श्रोत्रिय

बाल ब्रह्मचारी श्रीमान् 1008 सद्‌गुरु

स्वामी टेऊँराम जी महाराज प्रेमप्रकाशी

सर्वाधिकार सुरक्षित

तृतीय संस्करण
प्रतियां 1000

सम्वत् 2076, वर्ष 2019
98 वाँ चैत्र मेला, जयपुर

प्रकाशक:
सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज
प्रेम प्रकाश मण्डल ट्रस्ट,
अमरापुर स्थान, एम.आई.रोड, जयपुर

भेटा : 40/-

मुद्रक:
गणपति, जयपुर
9828112907

सद्गुरु टेऊँरामाष्टकम्

१. निश्शोकमानं गतरागद्वेषं, ज्ञानैकसूर्यं जगदेकवन्द्यम्।
अध्यात्मलीनं विनिवृत्तकामं, श्री टेऊँराम शरणं प्रपद्ये।।
२. यदा हि देशे यवनं प्रकोपात्, सिन्धोस्समीपे बत धर्म हानिम्।।
जनाञ्च सर्वान् व्यथितान् विलक्ष्य: श्री टेऊँरामेण धृतोऽवतार:।।
३. सुरक्ष्य धर्मं त्ववतीर्य भूमौ, प्रजासु व्याप्तञ्च विधर्मी धर्मम्।
विनाशाय तं मण्डल मण्डितेन, प्रकाशित: प्रेम प्रकाश मार्ग:।।
४. अष्टांगयोगे च समाहिताय, लोकोपकारे कृतनिश्चयाय।
तद् ब्रह्मतत्वे परिनिष्ठिताय, श्री टेऊँरामाय नम: शिवाय:।।
५. शिष्टैश्च सर्वै परिपूजिताय, स्वर्गाधिपतयेऽपि च नि:स्पृहाय।
कामादि षड्वर्ग जिताय तस्मै, श्री टेऊँरामाय नम: शिवाय।।
६. योगीन्द्र वृन्दै: छरिसेविताय, भक्तार्तिनाशे कृतनिश्चयाय।
सर्वात्म भावे परिनिष्ठताय, श्री टेऊँरामाय नम: शिवाय।।
७. पूर्णेन्दुशोभा परिपूरिताय, शुद्धाय शान्ताय गतस्पृहाय।
भस्मीकृताऽशेष निबन्धनाय, श्री टेऊँरामाय नम: शिवाय।।
८. भक्तेश्च मार्गस्य निदर्शकाय, प्रेम प्रकाश मण्डलोद्भवाय।
आचार्य वर्याय वशेन्द्रियाय, श्री टेऊँरामाय नम: शिवाय।।

सद्गुरु सर्वानन्द महिमा

१. सर्वानन्द प्रदातारं, सर्वानन्द विकासकम।
सर्वानन्दावितारंच सर्वानन्दं नमाम्यहम्।।
२. श्रीमान् श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ, मुकुटालंकार रूपो गुरु:।
योग: क्षेमकर: सुपूज्य चरणौ, रामेण तुल्यो गुणै:।।
संस्थाप्याश्रममुत्तमं जयपुरे, धर्म प्रचारे रत:।
सर्वानन्द यतीश्वरो विजयते, प्रेम प्रकाशे भुवि।।

!श्री गुरु परमात्मने नमः !!

!! कवितावली !!

"गुरु प्रार्थना अष्टक"

!! कवित !!

परम पावन गुरु तेरी हूँ दावन गुरु,
आवन जावन गुरु मेरा ही मिटाइये।
हम हैं अजान गुरु आप हो सुजान गुरु,
आतम का ज्ञान गुरु मुझको सुनाइये।
तरन तारन गुरु करन कारन गुरु,
विघन टारन गुरु बिगड़ी बनाइये।
कहे टेऊँ सतगुरु राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु चरन लगाइये।।1।।

परम दयाल गुरु परम कृपाल गुरु,
परम उजाल गुरु ज्योति को जगाइये।
सुंदर सुचाल गुरु नित ही निहाल गुरु,
अमर अकाल गुरु यम से बचाइये।
गोविन्द गोपाल गुरु प्रभु प्रतिपाल गुरु,
राम रखपाल गुरु बंधन छुड़ाइये।
कहे टेऊँ सतगुरु राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु चरन लगाइये।।2।।

परम उदारी गुरु परम भंडारी गुरु,
परम आधारी गुरु नाम को जपाइये।
पर दुःख हारी गुरु पर सुखकारी गुरु,
पर उपकारी गुरु हरी से मिलाइये।
नित अवतारी गुरु शुभ गुण कारी गुरु,
कर रखवारी गुरु ताप को जलाइये।
कहे टेऊँ सतगुरु राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु चरन लगाइये।।3।।

शाहन के शाह गुरु सच्चा पतिशाह गुरु,
बिन परवाह गुरु विपत्ति हटाइये।
बेवाहन वाह गुरु बेराहन राह गुरु,
गुणन अथाह गुरु मारग बताइये।
दया के दरियाह गुरु दोषन के दाह गुरु,
बख्श गुनाह गुरु मोहि न भुलाइये।
कहे टेऊँ सतगुरु राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु चरन लगाइये।।4।।

राजन के राज गुरु संत सिरताज गुरु,
महा महाराज गुरु मोहि अपनाइये।
गरीब निवाज गुरु राखो मेरी लाज गुरु,
पूरे कर काज गुरु अज्ञान उड़ाइये।
भवजल पाज गुरु सुखन समाज गुरु,
तारक जहाज गुरु भव से तराइये।

कहे टेऊँ सतगुरु राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु चरन लगाइये।।5।।

ब्रह्म के स्वरूप गुरु आतम अनूप गुरु,
अमल अरूप गुरु द्वंद्व को गलाइये।
अगम अगाध गुरु अमर अबाध गुरु,
अचल अनाद गुरु अभेद बनाइये।
देवन के देव गुरु अलख अभेव गुरु,
अटल अखेव गुरु स्वरूप लखाइये।
कहे टेऊँ सतगुरु राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु चरन लगाइये।।6।।

पूरन सुज्ञानी गुरु पूरण सुध्यानी गुरु,
पूरन सुदानी गुरु प्रेम को पिलाइये।
शरण पालक गुरु संकट घालक गुरु,
मेरे हो मालिक गुरु दरस दिखाइये।
करुणा निधान गुरु सद्‌महिरवान गुरु,
करले कल्याण गुरु सुमति सिखाइये।
कहे टेऊँ सतगुरु राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु चरन लगाइये।।7।।

निओटन ओट गुरु काटो भ्रम कोट गुरु,
मेटो जम चोट गुरु पापनि पलाइये।

वीरन के वीर गुरु धीरन के धीर गुरु,
पीरन के पीर गुरु शान्ति में समाइये।
तुम धन धन गुरु मैं हूँ तेरा जन गुरु,
मारे मेरा मन गुरु दोषन दलाइये।
कहे टेऊँ सतगुरु राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु चरन लगाइये।। 8।।

गुरु बिन गति नाहिं गुरु बिन मति नाहिं,
गुरु बिन सूझत न सुरति सुजान की।
गुरु बिन सुधि नाहिं गुरु बिन बुद्धि नाहिं,
गुरु बिन आवत न विरति विज्ञान की।
गुरु बिन जत नाहिं गुरु बिन सत नाहिं,
गुरु बिन लागत न निरति सु ध्यान की।
गुरु बिन नीति नाहिं गुरु बिन रीति नाहिं,
कहे टेऊँ होत नाहिं प्रीति भगवान् की।। 9।।

गुरु है सागर सम रतन है ज्ञान तामें,
जोई सेवे सोई पावे रतन विज्ञान को।
गुरु है मल्लाह सम नाम नाव चाढ़ कर,
पार पाहुंचाय देत मोक्ष के स्थान को।
वैद्य के समान गुरु नाम की दवाई देके,
द्वंद्व रोग दूर कर करत कल्याण को।
कहे टेऊँ रवि गुरु वचन किरण जांके,
ज्ञान का प्रकाश करत हरत अज्ञान को।। 10।।

गुरु शशि सूर्य सम हरत तपत तम,
गंगा के समान गुरु पावन करत है।
गुरु अज देत गुन गुरु हरि रक्षा करे,
शंकर समान गुरु संशय हरत है।
बादल समान गुरु वर्षा वचन कर,
शिष्य का हृदय नित गुणों से भरत है।
कहे टेऊँ गुरु सेव करे पाओ निज भेव,
गुरु के प्रसाद सब कारज सरत है।। 11।।

गुरुदेव माहिं जन धार सत्य भाव मन,
दोष दृष्टि सब हन गुण शुभ गहिये।
रजो गुण विधि दीस सत्तो गुण माहिं ईस,
तम हर धर सीस भार शेष सहिये।
शीत चन्द्र तेज सूर शील राम काल चूर,
बाण ले पार्थ सूर राज इंद्र कहिये।
विघ्न हर गणपति दुष्ट दले राधापति,
विज्ञानी वसिष्ट अति कहे टेऊँ लहिये।। 12।।

स्वर्ग सीस वायू प्रान रवि शशि नैन जान,
दशों दिश जांके कान मुख शिखी मानिये।
चरन पताल इंद्र हाथ निसदिन नाक,
दांत काल धड़ नभ पेट सून जानिये।
सिंधु मूत्र नदी नाड़ी बन रोम गिरी हाड़,
तारे तत मेघ गुण बुद्धि बीज गानिये।

कहे टेऊँ जोड़कर श्री गुरुदेव वर,

जांके पिंड माहिं ब्रह्मण्ड ही बखानिये ।। 13 ।।

कोई कहे पूज हर हरि देवी विधि सुर,

गंगा आदि तीर्थ चर गणेश गनायो है ।

नृसिंह बावन राम सूर शशि शेष श्याम,

सुर धेनु शालिग्राम सुरेश सुनायो है ।

अगनि पवन पानी शारदा निगम बानी,

वृहस्पति बल दानी धनेश जनायो है ।

कहे टेऊँ ऐसी बात सुन मन भरमात,

गुरुदेव देके दात आतम लखायो है ।। 14 ।।

दीनानाथ दीनबंधु दया के अथाह सिंधु,

शीतल स्वरूप इंदु तपत निवारे हैं ।

दूख हर सूख सर शील धर धीर धर,

नीति चर दुष्ट जर धर्म ध्वजा धारे हैं ।

ब्रह्मवेता ब्रह्मज्ञानी बोलत सु ब्रह्मबानी,

ब्रह्मज्ञान के सु दानी भजन भण्डारे हैं ।

कहे टेऊँ कर जोर मेरे गुरु शिरमोर,

मोह के बंधन तोड़ जनम सुधारे हैं ।। 15 ।।

देवन के देव गुरु पशु से मानुष कर,
मानुष से करे सुर कुनीर ज्यों गंग है।
नीम को चन्दन तरु सूली से कण्टक कर,
अंध देवे नैन वर देखे सर्व रंग है।
काक ही सो हंस होय कीट ही से भृङ्ग जोय,
लोहे सों कंचन लोय पलटाय अंग है।
कहे टेऊँ जागे पुनि गहे गुरु का वचन,
भया जड़ से चेतन ऐसा गुरु संग है।। 16।।

सतगुरु सुर तरु पूरन सु काम कर,
चन्दन पारस सर पलटाय अंग है।
दिनकर के समान अविद्या तिमिर हान,
जौहरी परख जान पाप हत गंग है।
मात तात भ्रात मीत शिष्यन को पाले नीत,
गोरख ज्यों गाय गीत तोड़े मोह संग है।
कहे टेऊँ गुरु वर रजक समान तर,
पापन की मैल हर लावे राम रंग है।। 17।।

गुरु के वचन सुन भया निरभ्रान्त मन,
जीव ब्रह्म रूप भया ध्यान धुनि लायके।
देखी यह विश्व सारी रज्जू बीच साँप सम,
भागा भ्रम देखा ज्ञान दीपक जगायके।
गुरु के सु ज्ञान कर छेदी ग्रन्थि चिद जड़,
आतम साक्षात कीना पड़दा उठायके।

सत्‌गुरु पै बार बार जाऊं बलि बलिहार,
कहे टेऊँ मुक्त कीना वचन सुनायके ।। 18 ।।

जैसे रति अलि फूल साँप बीन सुन झूल,
योगी जन कन्द मूल मारवाड़ बन को ।
सीप पपीहा चकोर बून्द चन्द्र संझ भोर,
थाके नर नींद घोर सत्यवादी पन को ।
मोर रति घन बीच दादर सनेह कीच,
रोगी दवा दुखी मीच मृग चहे बन को ।
कहे टेऊँ भूखे अन्न बछड़े सुरही थन,
तैसे चाहे मेरा मन गुरु दरशन को ।। 19 ।।

जैसे प्रीति जल मीन मधुरिख मधु लीन,
अलि कंज मृग बीन चंद से चकोर है ।
अनल पंछी अकास पतंग देख प्रकाश,
गऊ बछड़े के पास बादल से मोर है ।
चन्दन सरप पुनि चातक स्वान्ति घन,
चकवी को पति मन रैन रति चोर है ।
कहे टेऊँ निशि दिन योगी योग चाहे मन,
तैसे गुरु दरसन प्यास संझ भोर है ।। 20 ।।

जैसे रति घन मोर हंस सर रैन चोर,
सूर तेग कोक भोर कंगाल को दाम है ।

मृग नाद मीन नीर शुनि मांस नाग खीर,
युवति भूषण चीर कामी नर वाम है।
कोकिल को आम प्रेम विप्र व्रत नेमी नेम,
पतनी खसम क्षेम संतन को राम है।
कहे टेऊँ हरि जन सीप स्वांति मूँढ़ तन,
तैसे मोहि निशिदिन प्यारो गुरु नाम है।। 21।।

जैसे पंछी नभ जाय उड़त न अंत पाय,
सागर का थाह मीन कैसे कह साके है।
चली चींटी भूमि जोय पावत न अंत सोय,
जैसे बेटा बाप केरा जनम न ताके है।
शेष हरि नाम गावे गावत न अंत पावे,
हीरा का क्या मोल जाने बेचत जो शाके है।
कहे टेऊँ ब्रह्म रूप गुरु देव है अनूप,
कौन पार पावे जांको वेद कह थाके है।। 22।।

दास तो पुकारे नित दीनबंधु द्वार तेरे,
अपनी करुणा कर दीन जन जानके।
पतित पावन गुरु मुझ को पावन करो,
नदरी नदर धरो निज अंग मान के।
अवगुण अगार हम दया के भण्डार तुम,
मेरे अवगुण हरो दया उर आनके।
कहे टेऊँ गुरु देव माँगूँ चरनन सेव,
करिये निर्भय मोहि भय सब भानके।। 23।।

जागत है जीव जब गुरु पास जाय तब,
मृग ज्यों सुनत वाक्य श्रुति को लगायके।
बैठके एकांत धाम गुरु का सुमरे नाम,
चातक ज्यों बार बार वृति को लगायके।
हरे तन अभिमान आतम का धरे ध्यान,
चन्द्र चकोर जिम नृति को लगायके।
कहे टेऊँ ज्ञान पाय भ्रम तम को नशाय,
ब्रह्म में समात नित प्रीति को बढ़ायके।। 24।।

गुरु देव दीनबंधु तारो संसार सिंधु,
राखो मेरे माथे हाथ कृपा नित कीजिये।
कामादि विकार पांच कलेश निवारो मेरे,
तीन ताप पापन से मोहि राख लीजिये।
दीनता गरीबी दान विवेक वैराग्य ज्ञान,
ध्यान निज चरन को दास जान दीजिये।
जानके अपना बाल काटो यमकाल जाल,
करे टेऊँ को निहाल भव दुख छीजिये।। 25।।

सुनो मेरे मीत मन तजे अभिमान तन,
करो विद्या का पठन गुरु पास जायके।
गुरु है देवन देव करे नित तांकी सेव,
पाओ निजातम भेव वृति को लगायके।
गुरु को गोविन्द जान धरो तुम तांका ध्यान,
गहो गुरु से विज्ञान पद शिर नायके।

कहे टेऊँ होके दास बैठ गुरुदेव पास,
पाओ ज्ञान का प्रकाश गुरु गुन गायके ।। 26 ।।

तीर्थ व्रत जप दान तप योग धरे ध्यान,
गंगा आदि का सनान देव सेव करे है ।
ठाकुर की पूज धरे नेम धर्म सन्ध्या करे,
वेद पुराण पाठ पढ़े बन माहिं चरे है ।
मस्तक मुण्डाय पुनि भसमी लगाय तन,
कान ही फड़ाय कर हिमगिरि गरे है ।
कहे टेऊँ इतिआदि चाहे बहु कर्म करे,
गुरु ते विमुख होय, नर्क सोय पड़े है ।। 27 ।।

पढे वेद औ पुराण ब्रह्म का कथत ज्ञान,
जहाँ तहाँ मान पाय ,आप को पुजावे है ।
हेम गऊ कोटि कन्या कुरुक्षेत्र दान देवे,
अश्वमेध यज्ञ करे विप्रन जिमावे है ।
दसवें दुवार माहिं पवन को रोक राखे,
तपस्या कठिन साधे देवन मनावे है ।
कहे टेऊँ चाहे नर इत्यादि करम करे,
गुरु बिन पच मरे शान्ति नही पावे है ।। 28 ।।

आतमा है ब्रह्म नित्य तीन पांच ते अतीत ,
हर्ष शोक अरि मीत जीत नहिं हारो है ।

चिद जड़ ईस जीव तात पूत पति तीय,
एक दोय राम सीय तम न उज्यारो है।
सुख दुख पूण्य पाप दोष गुन दीन दाप
नीच ऊँच वर शाप श्वेत नहिं कारो है।
सुक्षम इस्थूल तन बानी बुद्धि चित मन,
कहे टेऊँ चिद घन सब ते नियारो है।। 29।।

ब्रह्म एक शुध्द रूप आतम अनूप ऊप,
जामें नहि छाय धूप अगम अपारो है।
आदि मध्य नाहिं अंत अजर अमर नित,
अस्ति भाति प्रियमय सर्व माहिं सारो है।
सत्‌चित सुखरासी घट घट मांहिं वासी,
पूरण स्वयं प्रकाशी जगत अधारो है।
साक्षी रूप चिदघन वेद करे वरनन,
कहे टेऊँ निशदिन ताहिं को जुहारो है।। 30।।

आतम है सत साक्षी वेद यह बात भाखी,
अजर अमर नित सुख रूप गायो है।
असंग अखण्ड आप जानत है पुण्य पाप,
सब घट नभ सम व्यापक बतायो है।
दीपक प्रकाश जिमि सब को प्रकाश करे,
अगम अलेप पुनि निर्गुण जनायो है।
कहे टेऊँ तत्त्व मेले महा वाक्य देके गुरु,
आतम ब्रह्म रूप मुझ को लखायो है।। 31।।

तीरथ अनेक करे बन बन में विचरे,

फल फूल खाय पुनि सहे शीत वात को।

ग्रन्थ अनेक पढ़े नानाविधि भेष धरे,

देवन की पूजा करे जागे सारी रात को।

करत साधन योग जप तप नेम होम,

हिमालय में जाय कर गारे निज गात को।

कहे टेऊँ और पुनि साधन बहुत साधे,

बिना ब्रह्म ज्ञान कब पावे नहिं शान्ति को।। 32।।

जैसे शब्द नभ माहिं स्पर्श पवन माहिं,

अग्नि माहिं उष्णता पूरन पछानिये।

सलिल में रस जैसे गंध है धरनि माहिं,

दूध माहिं घृत रवि किरण समानिये।

मिर्ची माहिं तीक्षणता ईख माहिं मधुरता,

घृत माहिं चिकनता गुणी गुण मानिये।

कहे टेऊँ तैसे नर सकल जगत माहिं,

निजातम ब्रह्म एक व्यापक पछानिये।। 33।।

वृक्ष सूना फल बिन घोड़ा सूना चल बिन,

मेघ सूना जल बिन धनी पुण्य दान रे।

रैन सूनी चंद बिन फूल सूना गंध बिन,

बानी सूनी छंद बिन जीभ हरी गान रे।

राजा सूना सैन बिन तन सूना नैन बिन,
चित सूना चैन बिन देह सूनी प्रान रे ।
देश सूना राव बिन मुखी सूना न्याय बिन,
कहे टेऊँ तैसे नर सूना निज ज्ञान रे ।। 34 ।।

सुपने में रंक राव भयो पूत बांझनी को,
निर्धन धन को पाय करत भंडारा है ।
अंधरे को नैन भये मूक मुख बैन भये,
पिंगले को पाँव भये चढ़े गिरिनारा है ।
बहुरा सुने बातन को वेदन को पढ़े मूढ़,
लूला काम हाथन सों करत अपारा है ।
कहे टेऊँ जागन से जैसे ये ही सत्य नाहिं,
तैसे ब्रह्म ज्ञान भये झूठा जग सारा है ।। 35 ।।

रज्जू माहिं साँप जैसे भासत है भ्रम कर,
भ्रम गये केवल ही रज्जू ही प्रभासे है ।
सीप के अज्ञान कर सीप में रजत भासे,
सीप के सुबोध भये रजत न भासे है ।
नभ माहिं नीलताई ठूंठ माहिं चोर पुनि,
दर्पण में प्रतिबिम्ब मिथ्या ही विकासे है ।
कहे टेऊँ ब्रह्म माहिं तैसे ये जगत नाहिं,
अज्ञ जग भासे ज्ञानी भ्रम ही प्रकासे है ।। 36 ।।

आतमा अलख एक जामें नाहिं मीम मेख,
ताहिं ते अनेक भये जग विस्तार जी।
अलख कहावै जोई कैसे लखा जावे सोई,
वाच से न लखे लखे लक्षणा को धार जी।
अलख में लख मान लख में अलख जान,
लख औ अलख इक रूप निरधार जी।
अलख तूँ आपे आप अपना ही जपो जाप,
कहे टेऊँ लखो ताहिं गुरुमुख द्वार जी।।37।।

मुख का भूषण नेक राम नाम जानो एक,
नैन का भूषण शुभ इष्ट केरा ध्यान है।
कान का भूषण वर देव वाणी सुनो नर,
धन का भूषण शुभ पात्र माहिं दान है।
पाँव का भूषण भले सत्संग माहिं चले,
हाथ का भूषण शुभ सेवा ही प्रधान है।
कहे टेऊँ सुनो जन सत मानो ये वचन,
बुद्धि का भूषण शुभ आतम ज्ञान है।।38।।

सिंह निज प्रतिबिम्ब देख कूप माहिं पड़ा,
कांच के महल बीच भौंक मरा स्वान रे।
कागज के हथिनी को हाथी देख खात पड़ा,
दीप को पतंग देख कियो तन हान रे।
नलिनी पे पाँव धर तोते ने फँसायो आप,
मर्कट चना की मूठी ले फस्यो अजान रे।

कहे टेऊँ अलि गंध मृग नाद मीन रस,
सबहिं अज्ञान कर दीने निज प्रान रे ।। 39 ।।

विद्या औ अविद्या केरा स्वरुप पछानो तुम,
अविद्या तिमिर विद्या प्रकाश स्वरूप है ।
विद्या ते आश बढ़े विषय की प्यास बढ़े,
यम केरी त्रास बढ़े महादुख रूप है ।
विद्या ते विज्ञान बढ़े धर्म अरु ध्यान बढ़े,
ब्रह्म का सु ज्ञान बढ़े जांकीं महा ऊप है ।
कहे टेऊँ तांते विद्या पढ़के अविद्या हर,
आतम स्वरूप लख नासे भरम कूप है ।। 40 ।।

काम क्रोध जैसे चोर जग में न और कोई,
मन जैसा वैरी कोई और न जहान रे ।
लोभ के समान भूख और न जागत माहिं,
मत्सर समान कोई अगिनि न आन रे ।
अहंता समान और जग माहिं रोग नाहिं,
मोह सम तम नाहिं निश्चय सु जान रे ।
कहे टेऊँ दुर आस जैसी नाहिं और फास,
तैसे और दुख नाहिं अज्ञान समान रे ।। 41 ।।

संत है स्वरूप राम देवीगुण सुखधाम,
निरवैरी है अकाम कछु न चहत है ।

हर्ष शोक हार जीत सम जाने वैरी मीत,
सहत उष्ण शीत दोषों को दहत है।
शीतल चन्दन वत कहत वचन सत,
आतम में राखे रति गुणों को गहत है।
कहे टेऊं संत जन ब्रह्म भाव धार मन,
सूर्य सम निशिदिन असंग रहत है।।42।।

संत है प्रभु के प्यारे फूलों के समान सारे,
देख ब्रह्म सूर्य नित पावत विकास है।
संत जो बोलत बानी सुगंध समान जानी,
भंवरा मुमुक्षु आय लेत तहाँ वास है।
जैसे फूल पत्ती-पत्ती सुगंध पूरन अती,
तैसे संत अंग अंग गुणों का निवास है।
सन्तन के पद प्राग पाय मेरे जागे भाग,
कहे टेऊँ मेरी वंद बार बार तास है।।43।।

संत जन नाव सम जान भव सागर में,
भाव युत जोई चढ़े सोई पार तरे है।
संत जन सुरतरु कामधेनु के समान,
भाव युत जोई सेवे तांके काज सरे है।
संतजन भृंग पुनि दीपक चन्दन सम,
अंग पलटाय कर निज सम करे है।
संतजन गंग सम जोई जन नाय लेवे,
कहे टेऊँ तांके सब पापन को हरे है।।44।।

सन्तन का स्वच्छ चीत जामें नही हार जीत,
तीन गुणों ते अतीत धीरज को धारे हैं।
गने न उषण शीत हर्ष शोक अरि मीत,
कटुक मधुर जांहि शूम न उदारे हैं।
सोना माटी मान अपमान जाने एक सम ,
निंदा पुनि उपमा को समान विचारे हैं।
कहे टेऊँ सुख दुख गने न तृप्ति भूख,
कालकूट सुधा एक सम ही निहारे हैं।। 45।।

कभी संत बन माहिं नगर निवास कभी,
कभी पट धारे कभी नगन गुजारे हैं।
कभी चढ़े हाथी घोड़े पैदल चलत कभी,
कभी ऊंचे सुर गावे कभी मौन धारे हैं।
कभी हंसे कभी रोवे कभी बैठे कभी सोवे,
कभी रजि खावे कभी भूख को सहारे हैं।
कहे टेऊँ हर्ष शोक संत कब नाहिं करे,
ब्रह्मानंद में मगन रहे मतवारे हैं।। 46।।

संत जन हंस सम विवेक की चूंच साथ,
साच दूध पीवे झूठ जल को त्यागे हैं।
मन बुद्धि इंद्रिय प्रान तांसे भिन्न आप जान,
देह दृश्य छोड़कर आतम में रागे हैं।
अस्ति भाति प्रिय ब्रह्म नाम रूप जग जान,
नाम रूप छोड़कर ब्रह्म माहिं लागे हैं।

कहे टेऊँ जानत है निजातम ब्रह्म इक
सम माहिं रहे भेद भ्रमन ते भागे हैं ।। 47 ।।

सन्तन का नाम नीका सन्तन का धाम नीका,
सन्तन का काम नीका निकी तांकी कहनी है।
सन्तन का संग नीका सन्तन का ढंग नीका,
सन्तन का अंग नीका नीकी तांकी बहनी है।
सन्तन का होश नीका सन्तन का रोष नीका,
सन्तन का तोष नीका नीकी तांकी सहनी है।
सन्तन का ज्ञान नीका सन्तन का ध्यान नीका,
टेऊँ है विज्ञान नीका नीकी तांकी रहनी है ।। 48 ।।

मृतक औ साधु दोई एक सम जान सोई,
एक को कफन दूजे कफनी सु डारी है।
एक शमशान रहे दूजा बन माहिं रहे,
एक कभी बोले नहीं दूजे मौन धारी है।
एक मर माटी होया दूजे अभिमान खोया,
एक आग जरे दूजे विरह जान जारी है।
कहे टेऊँ दोई जग आस ते निरास भये,
दोनों की समता हम अलप उचारी है ।। 49 ।।

सन्तन के संग माहिं शान्ति औ सुमति मिले,
सन्तन के संग मन पाप को त्यागे है।
सन्तन के संग माहिं प्रेम का प्रकाश होय,
सन्तन के संग कर सोया नर जागे है।

सन्तन के संग माहिं आतम का ज्ञान होय,
सन्तन के संग कर भेद भरम भागे है।
कहे टेऊँ जग माहिं सन्त जन धन्य धन्य,
सन्तन के संग राम नाम रंग लागे है।।50।।

पूरब के फले पुन मिले मोहि सन्त जन,
आज का दिवस धन मंगल मनाऊं मैं।
हाथ जोड़ वंद करूँ चरनन में सीस धरूँ,
आरती उतार कर हरी गुण गाऊं मैं।
फूल सेजा पै बैठाय मोती माल गल पाय,
भोजन भाव बनाय सन्तन खिलाऊँ मैं।
फल फूल देके धन वसन ओढ़ाय तन,
कहे टेऊँ इस विधि मोक्ष पद पाऊं में।।51।।

पूरब के भागन से होवे ऐसे कब दिन,
जिस दिन संत जन आवे मेरे धाम में।
वार वार वंद करूँ चरणों में सीस धरूँ,
तन अभिमान हरे रहूँ सेवा काम में।
तन मन धन पुनि सीस को अर्पण कर,
सत उपदेश सुन लाऊँ चित्त राम में।
कहे टेऊँ दिन रात यही मेरे मन आस,
संत का दीदार कर रहूँ विसराम में।।52।।

सन्तन का मैं हूँ दास सन्तन की मोहि प्यास,
सन्तन के रही पास गहूं गुण ज्ञान को।
सन्तन की करे सेव पाऊं भाव भक्तिभेव,
देखू निजातम देव धरे हरि ध्यान को।
सन्तन के सुन बैन पाऊँ चित माहिं चैन,
सन्तन की पूजा कर करूँ सन्मान को।
कहे टेऊँ सन्तन सों लेन देन करे नित,
सन्तन के संग पाऊँ पद निरबान को।।53।।

मुक्ति केरा हेतु इक ज्ञान ही कहत सब,
वैराग्य सहित ज्ञान सोई है प्रधान रे।
उत्तम वैराग्य सोई भोगन का राग तजे,
वैराग्य का हेतु इक विवेक पछान रे।
साच झूठ जानन को विवेक कहत वेद,
सन्तन के संग से विवेक हो महान रे।
कहे टेऊँ सुनो नर ताँते संत संग कर,
बिना संत संग कब होवे न कल्याण रे।।54।।

चलिए सन्तन पास छोड़ कर गृह आस,
चरनन में कर वास चित्त को लगाइये।
सन्तन की सेव कर तन मन भेंट कर,
आज्ञा माहिं नित चर सन्तन मनाइये।
सन्तन की शुभ बानी अमृत की जान खानी,
सुन कर ताहिं प्रानी भ्रम को मिटाइये।

कहे टेऊँ संत जन देत है आतम धन,
ताहिं में लगाय मन सहज समाइये ।। 55 ।।

झूठी प्रीति मात अरु तात की पछान की तुम,
काल जब आवे तब ताँसे न छुड़ावे है ।
झूठी प्रीति भाइयों की दुख में न साथ देवे,
झूठी प्रीति पुत्रन की आग में जलावे है ।
झूठी प्रीति पतिनी की अंत न निकट आवे,
झूठी प्रीति जगत की नेह न निभावे है ।
कहे टेऊँ सुनो मीत साची प्रीति सन्तन की,
लोक परलोक मांहिं संत काम आवे है ।। 56 ।।

कोई दंडवत करे कोई मारे लात शिर,
कोई भीख नाहिं देवे कोई तो खिलाये है ।
कोई मृदु बोले बानी कोई कटु भाखे प्रानी,
कोई कहे ब्रह्मज्ञानी कोई मूंढ गाये है ।
सेज पै सुलावे कोई धरा पै बिठावे कोई,
चन्दन चढ़ावे कोई धूलि सिर पाये है ।
कहे टेऊँ हर्ष शोक संत कब करे नाहिं,
दोनों ते अतीत होय ब्रह्म में समाये है ।। 57 ।।

संत को सताय जोई महा दुख पाय सोई,
जहां जहां जाय तहां अपमान पावे है ।

सन्तन से वैर राखे कटुक वचन भाखे,
मर कर यम की सो मार बहु खावे है।
सन्तन की निंदा करे सन्तन का मान हरे,
नर्क में सो दुःख भोग पापी पछतावे है।
कहे टेऊँ जोई जन सन्तन का बुरा चाहे,
बार बार जमे मरे चौरासी में जावे है।।58।।

ब्राह्मण चण्ड़ाल का ही मेल जैसे बने नाहिं,
मेल नहीं बने जैसे भोगी ब्रह्मचारी का।
बगुले मराल का ही मेल जैसे बने नाहिं,
मेल नहीं बने जैसे कृपण उदारी का।
भूंड अरु भँवरे का मेल जैसे बने नाहिं,
मेल नहीं बने जैसे मूरख विचारी का।
गुरुमुख मनमुख का न मेल बने जैसे,
टेऊँ तैसे मेल नाहिं साधु संसारी का।।59।।

कुटुम्ब का मोह छोड़ सन्तन से मन जोड़,
सन्तन के संग सम और नाहिं संग रे।
परमार्थी संत जन देत राम नाम धन,
स्वार्थ न राखे मन राचे हरि रंग रे।
मात पिता मीत सारे स्वार्थ के जान प्यारे,
बिना धन तोहि कहे खाओ भीख मंग रे।
कहे टेऊँ सन्त संग अपना कल्याण करो,
कुटुंब का संग त्यागे धारो धर्म अंग रे।।60।।

भूपन से सन्त जन जग में अधिक जान,

राजा रिपु देख डरे सन्त न डरत है।

राजा को तृष्णा अति सन्त को संतोष चित,

राजा बहु रोष करे सन्त न करत है।

राजा मन भोग आस सन्त भोग ते निरास,

राजा चिंता माहिं जरे संत न जरत है।

कहे टेऊँ मन के अधीन नृप दुखी रहे,

सन्त मन वश करे सुखी विचरत है।।61।।

शंकर को देखा चाहीं कैलाश में जाय देखो,

देवपति देखा चाहीं सुरधाम जाइये।

कुबेर को देखा चाहीं यक्षपुरी जाय देखो,

शेषनाग देखा चाहीं धरातल धाइये।

हंसन को देखा चाहीं मानसर जाय देखो,

पित्रन को देखा चाहीं चन्द्रलोक काहीये।

कहे टेऊँ तैसे तुम भगवान देखा चाहीं,

सन्तन के सभा जाय भगवान पाइये।।62।।

ब्रह्मज्ञानी ब्रह्मरूप भूपों के है महाभूप,

पंडित करत ऊप वेदों को विचारके।

निर्मान निरहंकार निरंजन निराधार,

अहंब्रह्म बोले सार जीवभाव जारके।

सकल चेतन घन जानत अपने मन,

ऐसी दृष्टि ज्ञानीजन चाले उर धारके।

कहे टेऊँ ज्ञानवान देके नित ब्रह्मज्ञान,
कोटिन कल्याण करे संशय निवारके ।।63।।

भला होना चाहो तुम भलन का संग करो,
भलन के संग माहिं भले होय जाओगे।
भले काम करो सदा तन मन धन सेती,
भले काम करने से यश जग पाओगे।
सन्तन की सेव कर भक्ति भाव उर धर,
दान दे के जप हरि सुख में समाओगे।
कहे टेऊँ भले काम करले सदा निष्काम ,
चौरासी के चक्र माहिं फेर नही आओगे ।।64।।

साधु नहिं कहो ताहिं घर छोड़ बन जाय,
साधु नहिं कहो जोय मन्दिर बनावे है।
साधु नहि कहो ताहिं मूण्ड को मुंडावे जोई.
साधु नहिं कहो जटा जूट जो रखावे है।
साधु नहि कहो ताहिं भेख बहु धारे जोई,
साधु नहिं कहो छाप तिलक लगावे है।
कहे टेऊँ सुनो जन कहूँ मैं वचन सत,
साधन को साधे जोई साधु सो कहावे है ।।65।।

साधु नहि कहो ताहिं कलंगी को राखे सिर,
साधु नहि कहो छत्र चंवर झुलावे है।

साधु नहि कहो ताहिं दूध का आहार करे,
साधु नहिं कहो जोय कन्द मूल खावे है।
साधु नहीं कहो ताहिं आग से तपावे तन,
साधु नहिं कहो छार तन को रमावे है।
कहे टेऊँ सुनो जन कहूँ मैं वचन सत,
साधन को साधे जोई साधु सो कहावे है।।66।।

साधु मत कहो ताहिं भूमि पै शयन करे,
साधु मत कहो जोय भीख मँग खावे है।
साधु मत कहो ताँहिं भांग मद पीवे हुक्का,
साधु मत कहो गांजा चर्श जो उड़ावे है।
साधु मत कहो ताँहिं चौरासी आसन साधे,
साधु मत कहो सिद्धि रिद्धि जो चलावे है।
कहे टेऊँ सुनो नर कहूँ मैं वचन सत,
साधन को साधे जोई साधु सो कहावे है।।67।।

तीर्थ में नहान चाहीं प्रेम सु प्रधान चाहीं,
विवेक विज्ञान चाहीं बोल राम नाम तूं।
भाव और भक्ति चाहीं योग केरी युक्तिचाहीं,
केवल सुमुक्ति चाहीं बोल राम नाम तूं।
सन्तन का संग चाहीं आतम का अंग चाहीं,
भ्रमन का भंग चाहीं बोल राम नाम तूं।
कहे टेऊँ गति चाहीं मति और सुमति चाहीं,
दोनों लोक पति चाहीं बोल राम नाम तूं।।68।।

दान और धर्म चाहीं शान और शर्म चाहीं,
मान और मर्म चाहीं बोल राम नाम रे।
धन और धाम चाहीं सुत और वाम चाहीं,
तन अभिराम चाहीं बोल राम नाम रे।
परमार्थ बुद्धि चाहीं रिद्धि नव निधि चाहीं,
काज सब सिद्धि चाहीं बोल राम नाम रे।
कहे टेऊँ सुख चाहीं दूर सब दुख चाहीं,
प्रसन्न जु मुख चाहीं बोल राम नाम रे।।69।।

आतम विचार चाहीं उत्तम आचार चाहीं,
मन का सुधार चाहीं बोल राम नाम तूं।
पर उपकार चाहीं यश विस्तार चाहीं,
स्वर्ग केरा द्वार चाहीं बोल राम नाम तूं।
पापों का प्रहार चाहीं तापों का संहार चाहीं,
शान्ति का भण्डार चाहीं बोल राम नाम तूं।
कहे टेऊँ सार चाहीं अपना उद्धार चाहीं,
आतम का दीदार चाहीं बोल राम नाम तूं।।70।।

राम नाम कहो मुख निशदिन पाओ सुख,
मानुष जनम ऐसा फेर नही पायेंगे।
मात तात सुत वाम भाई भैन धन धाम,
अंत काल माहिं तोहि कोई न छुड़ायेंगे।
देखो यह विचार कर कोई वस्तु नाहिं थिर,
स्वप्न समान कछु हाथ नही आयेंगे।

कहे टेऊँ पूरी आस जग में न भई कास,

तांते जप राम नाम सुख में समायेंगे ।। 71 ।।

राम नाम का उच्चार करो मन बार बार,

मोक्ष योग का भण्डार राम नाम एक है।

दुःख का भंजन राम सुख का सदन राम,

सब का सज्जन राम राम जग टेक है।

राम नाम पाप हारे राम नाम ताप टारे,

राम नाम पापी तारे भव से अनेक है।

कहे टेऊँ तजे काम जपो नित राम नाम,

राम नाम जोई जापे सोई नर नेक है ।। 72 ।।

राम नाम जाप कर अजामेल पापी तरे,

राम नाम जप गति गणिका ने पाई है।

राम नाम जाप कर जटायु ने मुक्ति पाई,

राम नाम जप तरे सधना कसाई है।

राम नाम जाप कर ऊँचो पद पायो ध्रुव,

राम नाम जाप कर तरा सैन नाई है।

राम नाम जाप कर शबरी ने राम पाया,

कहे टेऊँ केते तरे जिनों लिव लाई है ।। 73 ।।

जाप जैसा कर्म नाहिं मर्म जैसा शर्म नाहिं,

दया जैसा धर्म नाहिं धर्म जैसा दाम ना।

संत जैसा संग नाहिं प्रेम जैसा रंग नाहिं,
ईश जैसा अंग नाहिं गगन सा गाम ना।
हरि जैसा ध्यान नाहिं गीता जैसा ज्ञान नाहिं,
ज्ञान जैसा दान नाहिं शान्ति जैसी वाम ना।
मान जैसा खान नाहिं सुधा जैसा पान नाहिं,
कहे टेऊँ तैसे जग राम जैसा नाम ना।। 74।।

नदी सूनी नीर बिन चाप सूना तीर बिन,
गऊ सूनी खीर बिन सीता सूनी राम रे।
सेना सूनी वीर बिन वीर सूना धीर बिन,
भूपत वजीर बिन गृही सूना धाम रे।
नारी सूनी कन्त बिन मुख सूना दन्त बिन,
सभा सूनी सन्त बिन राधा सूनी श्याम रे।
धन सूना दान बिन संसारी सन्तान बिन,
कहे टेऊँ तैसे नर सूना हरि नाम रे।। 75।।

साँचा है हरि का नाम अंत काल आवे काम,
जगत के छोड़ धन्धे जपो हरि जाप को।
गर्भकुंड माहिं जब ऊंधे लटके थे तुम,
हरि से वचन किया भजूंगा मैं आपको।
जब ते बाहर आये माया देख भूल गये,
पेट परिवार हित कीनो कर्म पाप को।
कहे टेऊँ चेत अब वचन को पालो नर,
हरि का भजन करे हरो तीन ताप को।। 76।।

राम के भजन बिन वृथा है मानुष तन,
राम के भजन बिन वृथा तेरा नावना।
राम के भजन बिन वृथा सब भोग जानो,
राम के भजन बिन वृथा रस खावना।
राम के भजन बिन वृथा धन धाम सब,
राम के भजन बिन वृथा पट पावना।
कहे टेऊँ तांते तुम राम का भजन कर,
राम के भजन बिन वृथा जग आवना ।।77।।

राम नाम नाव सम सागर से पार करे,
आदि अंत करे रक्षा प्राणन आधारे हैं।
विभु एक अविनाशी अचल स्वयं प्रकाशी,
घट घट माहिं वासी नानाहूँ ते न्यारे हैं।
भोग मोक्ष सुख देत रिद्ध सिद्धि फल देत,
पावक के सम सब पापन को जारे हैं।
कहे टेऊँ जोई जन जपे ताहिं लाय मन,
सोई नर धन्य धन्य जगत मँझारे हैं।।78।।

जाने तोहि तन दियो ताहिं का भजन कर,
जाँने तो को जीभ दई ताँका जप नाम रे।
जाँने तोहि कान दिया तांकी नित गाथ सुन,
जाँने तोहि नैन दिया देखो सोई राम रे।
जाँने तोहि हाथ दीया ताहिं की तू सेव कर,
जाँने तोहि पाँव दीया चलो ताहिं धाम रे।

कहे टेऊँ जाने तोहि सुंदर ये अंग दीने,
ताहिं केरा गुन तुम गाओ आठों याम रे ।। 79 ।।

राज दीना ताज दीना सुंदर समाज दीना,
कारज सँवार दीना दीना धन धाम जी ।
खान दीना पान दीना मान औ सन्मान दीना,
सुंदर मकान दीना दीना है आराम जी ।
मन बुद्धि प्रान दीना जनम प्रधान दीना,
मीत सु महान दीना दीना सुत वाम जी ।
कहे टेऊँ जिस हरि एते उपकार कीने,
कृतघ्न क्यों न जपो ऐसा श्री राम जी ।। 80 ।।

हरना कस मार हरि प्रह्लाद की रक्षा कीनी,
चंद्रहास रक्षा कर दुष्टबुद्धि मारा है ।
कंस का हनन कर उग्रसेन राज दीया,
पांडवो की रक्षा हित कौरव संहारा है ।
दुर्वासा का मद मेट अम्बरीष राख लिया,
सधने की रक्षा हित भीत को उखारा है ।
कहे टेऊँ गज हित ग्राह को संहार कीना,
भक्त रक्षा हेतु हरि नाना रूप धारा है ।। 81 ।।

बालक की माता जैसे करत सभांर नित,
बछड़े को धेनु पाले तैसे हरि दास को ।

भक्तों पर भीड़ पड़े ईश अवतार धरे,

दुष्टन को मार मेटे भक्तनि की त्रास को।

भक्त सोवे हरि जागे भक्त पीछे हरि लागे,

भक्तन के दुःख हरे देवे सुखरास को।

कहे टेऊँ भक्त सदा प्रभु मन प्यारे लागे,

आदि अंत रक्षा करे जैसे जीव स्वास को।।82।।

भूप का हुकम चले अपने ही राज पर,

मुखी का हुक्म चले पंचो के दीबान पै।

इंद्र का हुकम चले स्वर्ग के देवन पर,

यम का हुकम चले मृतक के प्राण पै।

कर्म का हुकम चले कर्म के अधीन पर,

गुरु का हुकम चले शिष्य श्रद्धावान पै।

कहे टेऊँ स्वामी का हुकम चले दास पर ,

प्रेम का हुकम चले सकल जहान पै।।83।।

कामिनी की रीझ होय वसन भूषण कर,

बालक की रीझ होय किये दूध पान जी।

देवन की रीझ होय यज्ञ तप दान पर,

धन के देवन से ही रीझे लोभवान जी।

भिक्षुक की रीझ होय भीख बहु पाने पर,

आदर के देने पर रीझे गुणवान जी ।

सन्तन की रीझ होय सेवा श्रद्धा भाव पर,

तैसे टेऊँ प्रेम पर रीझे भगवान जी।।84।।

प्रभु साथ प्रेम कर प्रह्लाद ने पाया हरि,

प्रेम बिन हरनाकस नृसिंह ने डारा है।

प्रभु साथ प्रेम कर विभीषण राज पायो,

प्रेम बिन रावण को राम ने सँहारा है।

प्रभु साथ प्रेम कर उग्रसेन राजा भयो,

प्रेम बिन केसी कंस कृष्ण ने मारा है।

प्रभु केरे प्रेम वाले लोक परलोक सूँहे,

कहे टेऊँ प्रेम बिन जीवन असारा है।।85।।

प्रेम ही के वश प्रभु नाई बने सेन हित,

प्रेम वश केवट से चरण धुलाया है।

प्रेम ही के वश प्रभु बेर खाये भीलिनी के,

प्रेम वश हरि शाक विदुर का खाया है।

प्रेम ही के वश प्रभु पार्थ का रथ हाँका,

प्रेम वश प्रभु यज्ञ झूठ को उठाया है।

प्रेम ही के वश लीने तंदुल सुदामा जी के,

कहे टेऊँ प्रेम इक प्रभु मन भाया है।।86।।

सीता को ज्यों राम प्यारा राधा घनश्याम प्यारा,

संसारी को धाम प्यारा आंख को उजारा है।

कामिनी को काम प्यारा लोभिन को दाम प्यारा,

भक्तन को राम प्यारा मीन को ज्यों वारा है।

भँवरे को फूल प्यारा डूबते को कूल प्यारा,

शिव को त्रिशूल प्यारा उल्लू को अंधारा है।

योगिन को योग प्यारा भोगिन को भोग प्यारा,
तैसे टेऊँ हरि ही को प्रेम इक प्यारा है ।। 87 ।।

काहूं ने तो सुख जाना रैन के अधेरे माहिं,
काहूं ने तो सुख माना भानु के उजास में।
काहूं ने तो सुख जाना तीर्थ नहाने माहिं,
काहूं ने तो सुख माना विद्या के अभ्यास में।
काहूं ने तो सुख जाना जप तप योग बीच,
काहूं ने तो सुख माना विषय विलास में ।
कहे टेऊँ सुनो मीत साची यह बात कहूं,
हमने तो सुख माना प्रेम के प्रकास में ।। 88 ।।

दुःख सुख बंध मोक्ष दीनादीन हर्ष शोक,
जनम मरण पुनि निज माहिं जाने हैं।
नीच ऊंच रंक धनी सम्पति विपत्ति पुनि,
घट बढ़ लाभ हानि अपने में आने हैं।
शुभाशुभ पापपुण्य मान अपमान पुनि,
यश अपयश ही को आप माहिं ठाने है।
ताप शीत हार जीत हम तुम अरि मीत,
कहे टेऊँ भाव यह मन सब माने है ।। 89 ।।

बांदर बिजली जैसे चंचल रहत मन,
कूरम का माथ जैसे नदी माहिं जल है।

बालक पवन जैसे थिर न रहत छिन,
कुंचर के कान जैसे चल दल दल है।
भूप दीप दीप शिखा जैसे थिर रहे नाहिं,
नैन की पलक थिर रहत न पल है।
जैसे तरुवर छाया काया माया थिर नाहिं,
कहे टेऊँ तैसे मन जानो ये चंचल है।।90।।

मेरा मन कहा मान अपना स्वरुप जान
भटकट क्यों अजान पाओ गुरु धाम रे।
जगत की त्यागे प्रीत संतन सों लाओ चीत,
गोविन्द के गाओ गीत बैठ आठों याम रे।
जैसे नदी नाव जोग कुटम्ब को जान तैसे,
तामें मत मोह कर आवे नही काम रे।
कहे टेऊ बार बार तुझको पुकार कहुं,
मानुष का तन यह खोय न बेकाम रे ।।91।।

बालकों के मारने में पंडित बहुत देखे,
दीन मारने को बहु जालिम पछानिये ।
शेरन के मारन में बहु बलवान देखे,
पंछिन के मारन को मारी बहु मानिये ।
धातुन के मारन को बहु वैद्यराज देखे,
मीन मारन को बहु धीवर बखानिये ।
कहे टेऊँ सारा जग खोज कर देखा हम
मन के मारन वाला ज्ञानी कोई जानिए ।।92।।

देवन के जीतन में रावण आदिक सुने,
रावण जीतने वाले बालि आदि मानिये ।
राजा को जीतन वाले महा महाराज घने,
बैरी के जीतन वाले वीर बहु गानिये ।
सभा के जीतन वाले जग में विद्वान घने,
भारत जीतनवाले पाँडव बखानिये ।
कहे टेऊँ सारा जग खोज कर देखा हम,
मन के जीतन वाला ज्ञानी कोई जानिये ।।93।।

माया ही से पाप होत माया ही से पुण्य होत,
पाप पुण्य केरा बीज माया ही को मानिये ।
माया ही से दुख होत माया ही से सुख होत,
दुःख सुख केरा खेत माया ही को जानिये ।
माया ही से नर्क होत माया ही से स्वर्ग होत,
नर्क स्वर्ग केरा हेतु माया ही बखानिये ।
कहे टेऊँ माया माहिं गुन अवगुन आहिं,
तांते माया का ममत मन में न आनिये ।।94।।

माया दोय विधि मानो जड़ औ चेतन जानो,
एक जड़ धन दूजी चेतन सु नारी है।
प्रबल है माया दोई इनसे न बाचे कोई,
छल बल कर नित मोही विश्व सारी है।
देवता दनुज मोहे मानुष राक्षस मोहे,
पशु मोहे पंछी मोहे डारी मोह जारी है।

कहे टेऊ सोई बाचे रामरंग जोई राचे,
संत गये छूट फंसे जीव संसारी है ।।95।।

धन ही को धन धन भाखत है सब जन,
धन कर धनिन को कहे धनवान है।
धन पास देख कर होवत है मीत बहु,
धन कर जग माहिं होता बहु मान है।
धन कर माई बाप करत पियार अति,
भैन अरु भाई सब करत सम्मान है ।
धन बिन लोग सब करे तिरस्कार अति,
कहे टेऊँ तांते धन जग में प्रधान है ।।96।।

करत मलीन माया मन बुद्धि चित काया,
आशा तृष्णा चिंत केरी डारे गल फाँसी है।
देश औ विदेश माहिं जीव को भ्रमावे बहु,
सुख नहीं देत कभी महादुःख रासी है।
भोग भुगवाय कर पाप करवाय कर,
दूषण बढ़ाय कर करे नर्क वासी है।
कहे टेऊँ तांते जागो माया केरी आस त्यागो,
हरी के चरण लागो जोई अविनाशी है ।।97।।

जगत स्वरूपी इक बगीचा रचाया राम,
तामे माया रूपी फूल राखा बूड़दार जी ।

जगत स्वरूपी इक भवन रचाया राम,
तामें माया रूपी नारी राखी शोभादार जी।
जगत स्वरूपी इक रैन है रचाई राम,
तामें माया रूपी चन्द्र राखा चिमकार जी।
कहे टेऊँ सुनो जन माया से हो दान पुन,
माया बिन कोई काम चले न संसार जी ।।98।।

चलत जो खाय कछु बोलत जो हँसे बहु,
किये गुन माने नाहिं पर हित हाने है।
ज्ञानी अभिमान धरे विधवा शृंगार करे,
दोये बीच बोले जोय निज गुण गाने है।
धन हीन मान चाहे गये का जो सोच करे,
साधु दयाहीन नारी पति को न माने है।
कहे टेऊँ नीति तजे खूब रोटी खाय रजे,
हरि तजि आन भजे मूण्ढ ये बखाने है ।।99।।

पापन से राखे रति चाले जो पर की मति,
बोले न वचन सत संतन सताये है ।
चंदन को काट कर कीकर लगावे जोई,
त्यागी हो संग्रहे धन ऋण को बढ़ाये है ।
बूझे बिन बात करे निर्बल बली से लड़े,
देखे बिन दोष धरे दीनन दुखाये है ।
विप्र करे कर्म नीच जाने न निकट मीच,
कहे टेऊँ मूरख ये ग्रंथन में गाये है ।।100।।

प्रभु से विमुख होय संत न सेवत जोय,
मुण्ढन का मान कर रोष मन धारे है ।
कपट के करे धंधे माया माहीं होय अँधे,
दीन पै न दया करे जीवन को मारे है ।
कथा न सुनत कब देता नहीं दान कछु,
बड़ो की न बात माने हठ को न हारे है ।
झूठ साथ प्रीति कर साच नहीं भावे मन,
कहे टेऊँ दुष्ट के ये लक्षण उच्चारे है ।। 101 ।।

साधु मुख कथे ज्ञान कहे अभिमानी तिहं,
साधु जो समाधि लाय कहे ये अजान है ।
साधु जो रटन करे कहे ये भटक मरे,
साधु बैठ करे थान कहे गृहवान है ।
साधु नमी पाँव पड़े कहे ये मेरे सों डरे,
साधु सिंह रूप धरे कहे मद मान है ।
साधु जो जो काम करे तामें तर्क दृष्टि धरे,
कहे टेऊँ दुष्टन का ऐसा नित ध्यान है ।। 102 ।।

सज्जन दुर्जन नर दोनों हैं जगत माहिं,
सुखद सज्जन संग दुष्ट दुखदायी है ।
सज्जन सु वारवार करे पर उपकार,
दुष्ट अपकार कर करत बुराई है ।
सज्जन चन्दनवत देवत सुगन्धि नित,
दुष्ट साँप सम विष देत अधिकाई है ।

दुष्ट जन संग त्याग सजन संगति लाग ,
कहे टेऊँ इस माहिं तेरी ही भलाई है ।। 103 ।।

बुरन का संग बुरा ताँते बुरा संग तजो ,
बुरन का संग तुझे बुरा ही बनायेंगे ।
बुरन के संग माहि शान्ति कब आवे नाहिं ,
काम क्रोध आग मांहि तुझको जलायेंगे ।
बुरन की संगति से बुरा काम सीख कर ,
बुरे काम करे तुम पीछे पछतायेंगे ।
आग जरो डूब मरो बुरा संग नांहि करो ,
कहे टेऊँ बुरे संग अति दुख पायेंगे ।। 104 ।।

तामसी है बुद्धि जांकी चाल है मलीन ताँकी,
क्रोधी पुनि क्रूर ताँका रहत स्वभाव है ।
बोलत कटुक बानी बहुत दुखावे प्रानी ,
जैसे तीर जाय कर करे तन घाव है ।
क्रोध युत नैन करे तन मन माहिं जरे ,
कम्पत सकल अंग ठौर नहीं पाव है ।
कहे टेऊँ ऐसी बुद्धि माहिं पड़े नाहिं सुधि ,
दुष्ट पाप कर्म कर घोर नर्क जाव है ।। 105 ।।

पाप करे निज हाथ लगावत भावी साथ ,
तांको भोगे कूटे माथ हाय हा पुकारके ।

पाय के मनुष्य तन गाय नहिं हरि गुन,
पशु ज्यों फिरत बन गफलत धारके ।
मन लावे भोग माहिं योग नहिं भावे ताहिं,
साच झूठ चीने नाहिं मन में विचारके ।
कहे टेऊँ कैसे तरे पापी पाप कर्म करे,
फिर फिर जन्मे मरे हीरा तन हारके ।। 106 ।।

खगपती नाग मारे नाग मारे मेंढ़क को,
मेंढ़क मच्छर ही को बाज लवा मारे है ।
मूसे को मँझारी मारे मँझारी को स्वान जैसे,
पंछिन को बन माहिं मारी मार डारे है ।
मृग आदि पशुन को शेर मार डारे जैसे,
मीना को धीवर मार जल से निकारे हैं ।
कुँचर को चींटी मारे अजा को कसाई जैसे,
कहे टेऊँ तैसे काल सबको सहारे हैं ।। 107 ।।

काल मारे कुम्भकर्ण दशशीश मेघनाद,
खर औ दूषण जैसे मारे बाणासुर को ।
शिशुपाल जरासंध चाणूर मुष्टिक पुनि,
अघासुर बकासुर मारा कंसासुर को।
हिरणाक्ष हरनाकस कालनेमि आदि हने,
मधु औ कैटभ पुनि मारा जलन्धर को।
कहे टेऊँ ऐसे वीर काल ने संहारे सब,
यतन बहुत किये रहा न अमर को ।। 108 ।।

काल महा बलवंत बड़े बड़े भूप हने,
दिलीप औ दशरथ मान्धाता को मारे हैं ।
सहस्त्रबाहु चित्रकेतु बाली औ प्रतापभानु,
नल नील जामवंत सुग्रीव सहारे हैं ।
प्रियव्रत पृथु राजा कौरव पाण्डव बली,
कांरू सिकन्दर दारा अफलातून हारे हैं ।
कहे टेऊँ सुनो जन जोई आये धार तन,
काल से न बाचे कोई सब को प्रहारे हैं ।। 109 ।।

तरु से गिरा जो फल फेर नहिं लागे ताहिं,
गल जाय ओला फिर हाथ नहिं पावे हैं ।
छूटा हुआ तीर फिर वापस न आवे कब,
मुख से निकला बोल फेर नहिं लावे हैं ।
पीसा अन्न चक्की माहिं फेर नहिं सारा होवे,
दुहा हुआ दूध फिर थने न समावे हैं ।
कहे टेऊँ गया समा फेर नहिं आय हाथ,
तैसे ही मानुष तन फेर नहिं आवे हैं ।। 110 ।।

मानुष जनम तुम भोगों में न खोय नर,
एक बार गया यह फेर नहिं पायेंगे ।
आज कहे काल करूं काल कहे काल फिर,
काल काल कर तोहि काल लेके जायेंगे ।
काल जो करना काज सोई काज कर आज,
आज का सो अब कर ना तो पछतायेंगे ।

कहे टेऊँ गफलत छोड़ हरि नाम जप,
ना तो यमपुर जाय खता बहु खायेंगे ।। 111 ।।

भटक चौरासी जोनि पाया है मनुष्य तन,
चेतिये सज्जन यहाँ तू तो महिमान है ।
काल बलवान अरी सब का संहार करे,
तुझे भी पकड़कर हरे तन प्रान है ।
यम की पड़ेगी फाँस निकल जायेंगे श्वास,
तातें तज सब आस झूठा ये जहान है ।
कहे टेऊँ अब जाग भोगन का संग त्याग,
गुरु के चरण लाग जिसमें कल्यान है ।। 112 ।।

हरि नाम नाहिं लीनो भोग रस माहिं भीनो,
मन वश नाहिं कीनो कीनो तन पीनो है ।
धारत न धर्म झीनो चालत ढंग नवीनो,
पापन हेतु प्रवीनो पुण्यनि को छीनो है ।
ब्रह्म में न भयो लीनो प्रेम रस नाहिं पीनो,
हाथ से न दान दीनों भयो मति हीनो है ।
कहे टेऊँ काल तीनों अहंभाव नाहिं खीनो,
आतम को नाहिं चीनो वृथा तव जीनो है ।। 113 ।।

नैनो में प्रकाश दिया हरि के देखन हेत,
रसना में बोल दीना राम को उच्चार रे ।

पावों में चलन दिया सत्संग में जाने हेत,
हाथन में क्रिया दीनी सेवा दान धार रे ।
मन में मनन दिया आतम चिंतन हेत,
बुद्धि में विवेक दीना ब्रह्म को विचार रे ।
मनुष जनम पाय करे जो न काम यह,
कहे टेऊ संत कहे ताहिं को धिक्कार रे ।। 114 ।।

दीना जिस तोहे तन नारी सुत धाम धन,
खाते हो जिसी का अन्न ताहिं न ध्याया रे ।
तुम ते कूकर वर धनी का न छोड़े दर,
नमकहराम नर काहे मात जाया रे ।
दोई कुल मात तात किये तो पतित पात,
नाड़े के बदले तेरा सीस न कटाया रे ।
कहे टेऊँ निशदिन धिक धिक तोहे जन,
हरि के भजन बिन जनम गवांया रे ।। 115 ।।

हरी के भजन हेत मानुष जनम लिया,
तांको छोड़ माया माहिं मन लपटाया रे ।
सन्तन का संग त्याग मूण्डन का संग किया,
कुटम्ब के फंदे माहिं आप को फसाया रे ।
ये तो भोग रस तोहि पशु जूनि माहिं मिले,
ताहिं में लपट कर प्रभु को भुलाया रे ।
कहे टेऊँ चेत अब अपना संवार काज,
प्रभु का भजन कर जांकें लिये आया रे ।। 116 ।।

मानुष जनम पाया रैन गई दिन आया,
सफली करले काया हरिनाम ध्याय के ।
मुख से जपीजे राम हाथन से कीजे काम,
दीनन को दीजे दान सीस को निवाय के ।
धारिये सुधर्म धीर टारिये पर की पीर,
मारिये न काहिं वीर दया चित लायके ।
कहे टेऊँ सुनो जन तजे अभिमान तन,
शान्ति पद पाओ मन सन्तन में जायके ।। 117 ।।

फूटे घट माहिं जैसे पानी न रहत थिर,
तैसे थिर नाहिं रहे होवे हानि तन की ।
लकड़ी ज्यो हाड़ जले केस जले घास जैसे,
जैसे चीर जले तैसे चमड़ी बदन की ।
जिस तन को ही तुम पालत पोषत नित,
इक दिन सोइ तन खाक हो मसन की ।
अपना कल्याण चाहो तन का अध्यास तज,
कहे टेऊँ आस राखो हरि के भजन की ।। 118 ।।

भोगन को चाहो मत भोग है दुखन रास,
मृग जल स्वपने ज्यों झूठा पहिचान रे ।
भोगन की आस बुरी शान्ति कब देत नाहिं,
अन्त काल दु:ख पाय नर्क जा निदान रे ।
भोग रस करे दीन तांको चाहे मति हीन,
भोग भोगे मूढ़ नर करे तन हान रे ।

कहे टेऊँ ताते तुम भोगन की आस त्यागे,
सन्तन के संग करो हरिगुन गान रे ।। 119 ।।

मात तात सुत दारा भाई बन्धु लोक प्यारा,
स्वार्थ के वश सारा जात बलिहारे हैं।
स्वार्थ न रहा जब कोई न पूछत तब,
दुख देख भागे सब विपत्ति न टारे हैं ।
देह से निकले प्राण वेग कहे काढ़ो अब,
लेके श्मशान माहिं देके आग जारे हैं ।
कहे टेऊँ तांते तुम कुटम्ब का मोह तजे,
सन्तन से प्रेम करो साचे संगी थारे हैं ।। 120 ।।

मानले वचन मेरा संगी नहिं कोय तेरा,
करत बखेरा काहि झूठा ये पसारा है ।
मृग जल जैसे जग प्यास न बुझत तासे,
स्वपने के सम यह जगत असारा है ।
ताँते छोड़ ताकी आस आस है दुखन रास,
डार गले यम फास देत नर्क द्वारा है ।
कहे टेऊँ सुनो प्रानी जगत को जान फानी,
पढ़ो रामनाम बानी जांसे निसतारा है ।। 121 ।।

सुनो तुम मेरे मीत कुटम्ब की छोड़ प्रीति,
कुटम्ब जगत माहिं देत दुख भारा है ।

राम न जपन देत दान न करन देत ,
जोर से लगावत ये पापन मँझारा है ।
स्वार्थ को मन धरे तेरे से ये प्रेम करे ,
अंत जब आवे तब करत किनारा है ।
टेऊँ परिवार माहिं खोज देखा सुख नाहिं ,
सन्तन का संग करो जाँसे निसतारा है ।। 122 ।।

मुख से बोलत नाहिं सत्य हरि नाम जोई ,
पर निंदा झूठ कहे मूक ताहिं मानिये ।
कानों ते सुनत नाहिं वेद संत वाक्य जोई ,
नित ही निन्दा सुने सो बहिरा बखानिये ।
नैनों से देखत नाहिं संत गुरु राम जोई ,
बुरे बुरे दृश्य देखे अंध ताहिं जानिये ।
कहे टेऊँ सब अंग लावे कुभ कर्म जोई ,
ऐसा नर जीवत ही मृतक पछानिये ।। 123 ।।

नाना विधि भोग रस भोग लेवूं अहनिस ,
मेरी काया मेरी माया यही जाकां ध्यान रे ।
साध संग जात नहिं परमार्थ पात नहिं
खेल बाजी देखे नैन सुने बुरे गान रे ।
शुभ कर्म हीन तन रहत मलीन मन ,
भावत न रामनाम निंदा को बखान रे ।
कहे टेऊँ ताँकी गति होवत न कदाचित ,
भोग भोग रोग पाय नर्क जा निदान रे ।। 124 ।।

पावन करम कर सूक्ष्म विचार धर ,
बुद्धि मन निज घर मांहि तब आयेंगे ।
गुरु के चरन ध्याय आतम का ज्ञान पाय ,
आतम साक्षातकार तब तुम पायेंगे ।
सन्तन की सेव करो रसना से राम ररो ,
पाप ताप सब तेरे तब मिट जायेंगे।
भोगन की आस त्याग आतम अंतर जाग,
कहे टेऊँ तब तुम सुख में समायेंगे ।। 125 ।।

सीतल स्वभाव राख प्रेम सुधा रस चाख ,
वचन विचार भाख चालो नेक गति रे ।
वेद वाक्य को विचार सन्देह सफल टार ,
आतम की दृष्टि धार पाओ पुरुष सत रे ।
परमानंद पद पाय लीन तामें होय जाय ,
निर्गुन समाधि लाय जाँसे हो मुक्ति रे ।
कहे टेऊँ ऐसी विधि काज सब होवे सिद्धि ,
साधु संग पाय बुद्धि गुन गाओ नित रे ।। 126 ।।

जीवन को चाहो नर सदा शुभ कर्म कर ,
संतन के संग माहिं हरि गुण गाइये ।
श्रेष्ठ ही विचार कर श्रेष्ठ ही आचार कर ,
पर उपकार कर धर्म चित लाइये ।
काम और क्रोध त्याग लोभ मोह मद त्याग ,
भोग रस माहिं निज मन न लगाइये ।

कहे टेऊँ जप नाम छोड़ झूठे सब काम ,

अपना जीवन ऐसे सफल बनाइये ।। 127 ।।

कीना चाहो दूर दुःख त्याग भोग रस सुख ,

भोग रस त्यागे बिन सुख नहि सोवेंगे ।

हरि साथ प्रीति करो मन की ममता हरो ,

ममता के त्यागे बिन रैन दिन रोवेंगे ।

गुरु के शरण जाओ ब्रह्म का ही ज्ञान पाओ ,

ब्रह्मज्ञान पाये बिन ब्रह्म नहि जोवेंगे ।

कहे टेऊँ अब जाग तीन ईषणा को त्याग ,

ईषणा को त्यागे बिन मुक्तनहिं होवेंगे ।। 128 ।।

बालापन बूढ़ापन माहिं कछु होत नाहिं ,

अज्ञान आलस दुःख दीनता की खानी है ।

सतकार नाहिं लहे सदा तिरस्कार सहे ,

दिन दिन तृष्णा मन होत अधिकानी है ।

उद्यम न कर सके बात ही बहुत बके ,

चिंता औ रुदन माहिं अवस्था विहानी है ।

कहे टेऊँ वस्था दोई तामें न भजन होई ,

भजन करन हित एक ही जवानी है ।। 129 ।।

वन में निवास करे चाहे गुफा वास करे ,

जटा सिर राखे चाहे मस्तक मुण्डावे है ।

अनल में देह जारे हिमाले में तन गारे ,
चाहे करवट गिरे संकट उठावे है ।
वाम सुत धाम त्यागे मरघट माहिं जागे ,
चाहे नंगे होवे चाहे खाक सिर लावे है ।
कहे टेऊँ ऐसी विधि साधना को करे सिद्ध ,
अहंभाव त्यागे बिन शान्ति नहिं पावे है ।। 130 ।।

भोगन के पड़े फंदे काहे नर होय अंधे,
झूठे कर कर धंधे वृथा आयु हारी है।
बालापन सारा तुम खेलन में खोइ दिया,
जोभन के माहीं तुम नारी कीनी प्यारी है।
बुढ़ापे में मती गई ममता बहुत बाढ़ी,
मोह कर कुटुंब में पाया दुख भारी है।
कहे टेऊँ सुनो जन हरि के भजन बिन,
खोई तीन वस्था भये नर्क अधिकारी है ।। 131 ।।

हरि के भजन हित मिला तन मन वित्त,
हरी में लगाओ चित ताहिं ना भुलाइये ।
गाय ले गोविंद गीत धारे ले सुधर्म नीत,
नायले गंग पुनीत पापन मिटाइये ।
संतन की सेवा कर पाओ फल चार वर,
जीते पाए मुक्तिघर बंधन हटाइए ।
कहे टेऊँ तज आस रही गुरुदेव पास,
पाय ज्ञान का प्रकाश ब्रह्म में समाइए ।। 132 ।।

सम जैसा सूख नाहिं द्वंद्व जैसा दूख नाहिं,
तृष्णा जैसी भूख नाहिं जम जैसा त्रास ना ।
क्षमा जैसी खाट नाहिं प्रेम जैसा पाट नाहिं,
सत्संग सा हाट नाहिं ममता सी फास ना।
धर्म जैसा धन नाहिं गुरु सा सज्जन नाहिं,
ज्ञान सा अंजन नाहिं प्रीति जैसी प्यास ना ।
कहे टेऊँ सुनो बीर गंगा जैसा नाहिं नीर ,
लाज जैसा नाहिं चीर स्वास जैसी रास ना ।। 133 ।।

लोभ जैसा फंद नाहिं त्याग जैसा गंध नाहिं,
मूण्ढ जैसा मंद नाहिं तमना सा ताप ना।
चिंता जैसा रोग नाहिं आनंद सा भोग नाहिं,
गुणों जैसा चोग नाहिं थिरता सा थाप ना ।
आज्ञा जैसी सेव नाहिं हरी जैसा देव नाहिं,
ज्ञान जैसा भेव नाहिं सोहम् सा जाप ना।
कहे टेऊँ सुनो मीत मन जीत सी न जीत,
भ्रम जैसी नाहिं भीत झूठ सम पाप ना ।। 134 ।।

विषय सा बन्ध नाहिं काम जैसा अन्ध नाहिं,
मान जैसा मध नाहिं वेद सम बैन ना ।
क्रोध जैसा काल नाहिं मोह जैसा जाल नाहिं ,
संसे जैसा साल नाहिं विद्या सम धैन ना ।
मन जैसा खल नाहिं चित्त जैसा चल नाहिं,
नारी जैसा छल नाहिं बुद्धि सम नैन ना ।

कहे टेऊँ सुनो जन मानव सा नाहिं तन,
तोश जैसा नाहिं धन ब्रह्म सम ऐन ना। ।। 135 ।।

मात तात सोई जोई धर्मी शिक्षा देत सुत,
कुल को ऊजल करे पूत सो प्रधान रे ।
पति सोई पतनी की रक्षा करें निशदिन,
नारी वहीं जाने निज भर्त्ता भगवान रे ।
भाई सोई भाई की जो भूल ना बुराई करे,
संकट में साथ रहे मीत सो महान रे ।
कहे टेऊँ सूरा सोई वचन का पूरा जोई,
भूपत सो जानो जोई प्रजा रखवान रे ।। 136 ।।

विप्र वर जानो सोई षट कर्म करे जोई,
क्षत्री सोई धर्म हित देवे धन प्रान रे ।
वैश्य सोई जानो गऊ सेवा खेती वणज करे,
तीनों की जो सेवा करे शूद्र सो पछान रे ।
दाता सोई जानो जोई दान सु सम्मान देवे,
कहे टेऊँ मानुष सो जांको निज ज्ञान रे ।
कवि है प्रधान सोई सन्त सन्माने जाँहि,
क्षमा धारे मन माहिं सोई बुद्धिमान रे ।। 137 ।।

सेवक कहावे सोई सेवा चित लावे जोई,
बिना सेवा सेवक न कबहुं बखानिये ।

पूरा शिष्य जान सोई गुरु आज्ञा माने जोई,
आज्ञा माने बिन शिष्य कबहुं न मानिये ।
पूत है सपूत सोई ऊँचा कुल करे जोई,
हरि का भजन करे भक्त सोई जानिये ।
कहे टेऊँ साधु सोई साधे पर कार्य जोई,
ब्रह्म का है ज्ञान जाँको गुरु सो पछानिये ।। 138 ।।

पतिव्रता पति सेवे और में न चित देवे,
अपने पति को नित जाने निज प्रान जी ।
पतिव्रता पति केरी अहनिश आज्ञा माने,
पतिव्रता पति पर जावे कुरबान जी ।
पतिव्रता पति आगे मीठा बोले नम्र चले,
पतिव्रता पति ही को जाने भगवान जी ।
कहे टेऊँ पतिव्रता साई धन्य धन्य जान,
दोनों कुल तारे करे अपना कल्यान जी ।। 139 ।।

मनुषों को देत अन्न पशुओ को घास देत,
पंछिन के हेत फल आगे रचि धरे हैं ।
कीड़िन को देत कन हाथिन को देत मन,
अजगर दे अहार जो न काहू चरे हैं ।
जल के थल के पुनि पाहन के जीव पाले,
आकाश के जीव का प्रभु पेट भरे हैं ।
कहे टेऊँ सुनो जन धारो विश्वास मन,
पेट की न चिन्त करो हरि चिन्त करे हैं ।। 140 ।।

पाँच काम जीवन को वेग है करन योग ,
शत काम छोड़ पहले करे इस्नान जी ।
दूजा काम यह करे तामें ढील नाहिं धरे ,
छोड़के सहस काम पहले खाये खान जी ।
तीजा काम अभिराम करे नित निष्काम ,
लाख काम छोड़ देवे दीनन को दान जी ।
टेऊँ चौथा कोटि काम छोड़ के सत्संग जाय ,
पाँचवां सबको छोड़ जपे भगवान जी ।। 141 ।।

काम कर कीचक आदि शत भाई मरे ,
क्रोध कर दुर्योधन कुल को सँहारा है ।
लोभ कर कारून ने नर्क जा निवास किया ,
मोह कर चित्रकेतु नैन नीर हारा है ।
मद से हरनाकस अपनी दुर्गति कीनी ,
पाँच विकारन इन पाँचनि को मारा है ।
कहे टेऊँ धन्य सोई पाँचों केरा संग त्यागे ,
गुरु पद लाग जिन जनम सुधारा है ।। 142 ।।

कलि के ही बल कर पाप करे बहु नर ,
मूर्खों से लावे मन संतो को दे गारी है ।
दोष करे दिन रैन बोलत कटुक बैन ,
धाम में न पूजे धैनु मुर्गी लागे प्यारी है ।
जिसका नमक खाय उसकी बुराई चाहे ,
मात तात को दुखावे भावे मन नारी है ।

कहे टेऊँ कलि काल ऐसा अति विकराल ,
तांसे बाचे सोई जांपे गुरु कृपा धारी है ।। 143 ।।

सतयुग माहिं लोग अपने कल्याण हित ,
तप योग साधे जत सत माहिं चरे जी ।
त्रेतायुग माहिं नर अपने उद्धार हित ,
वेद विधि यज्ञ होम कर्म शुभ करे जी ।
द्वापर युग के माहिं अपने कल्याण हित ,
पूजा अर्चा करे नर इष्ट ध्यान धरे जी ।
कहे टेऊँ कलि माहिं संतो की संगत कर ,
दान देते नाम लेते भव सिंधु तरे जी ।। 144 ।।

जैसे मीन मैल गहे कीच में मेढक रहे ,
भूंड नित मैल गोली मुख माहिं धारे हैं ।
चिचड़ रकत पीवे औषधि गहत रोग ,
शूकर कूकर कर विष्टा को अहारे हैं ।
मीन को बगुला गहे कोलू गहे कूकस को ,
छान को छलनी गहे आटा को प्रहारे हैं ।
कहे टेऊँ जैसे कीड़ी छिद्र को ढूंढ़त फिरे ,
तैसे अवगुणी नर दोष को निहारे हैं ।। 145 ।।

मानुष जनम लेके काम नीके नाहिं कीने ,
आम को उखाड़ तरु कीकर लगाये हैं ।

पशुवत पेट भरे हरि का न ध्यान कीना ,
भव कूप माहिं पड़ बहु दु:ख पाये हैं ।
काम क्रोध लोभ माहिं आयु सब खोय दीनी ,
साधु संग बैठके न हरि गुन गाये हैं ।
कहे टेऊँ तीन लाज तोड़के न काज कीना ,
आप जाने बिन तन रतन गँवाये हैं ।। 146 ।।

हीरे तन मानुष को पाय कर जग माहिं,
रसन में फस कर राम क्यों विसारे हैं ।
कुटुम्ब के जाल माहिं मीनावत फस रहे ,
धीवर ज्यो काल आय तुम ही को मारे हैं ।
पाप पुण्य केरा लेखा पूछे यमराज जब ,
ताँके आगे मुख से तू मूढ़ क्या उच्चारे हैं ।
कहे टेऊँ अब जाग गुरु के चरन लाग ,
भारी भव सागर से सतगुरु तारे हैं ।। 147 ।।

पाँचों इन्द्रि भोग रस कैदखाने माहिं पड़ी ,
कहो गुरु कैसे सत शब्द मन लाइये ।
कान लागे श्रवण में नैन लागे देखन में ,
नाक लागे सूंघन में कैसे शान्ति पाइये ।
रसना विष रस खान पान माहिं लागी ,
त्वक भोग भोगे कैसे हरि गुन गाइये ।
कहे टेऊँ शिष्य जागी पाँचो को उलट कर ,
स्वासन से जप नाम मन ठहराइये ।। 148 ।।

मन में गुमान धर कविता बनाय कर ,
लोकन के आगे जोय ऊँचे स्वर गावे हैं ।
ऐसी वाणी मदारी के खेल ज्यों न थिर रहे ,
कागज के फूल जिमि सुगन्ध न पावे हैं ।
प्रेम में मगन होय वाणी को बनावे जोय ,
ऐसी वाणी रस भरी सब मन भावे हैं ।
कहे टेऊँ सुने जोई ताँके मन घाव होई ,
विवेक वैराग्य देके जीव को जगावे हैं ।। 149 ।।

साधु के लक्षण कहूं सुनो तुम कान देके ,
साधन जो चार साधे साधु सोई जान रे ।
विवेक वैराग्य खट सम्पता मुमुक्षता को ,
धारे मन माहिं करे वासना की हान रे ।
सत्गुरू के द्वार जाय इच्छा बिन सेवा करे ,
आतम का ज्ञान सुन करे भ्रम भान रे ।
बैठके एकांत नित ब्रह्म का चिंतन करे ,
कहे टेऊँ ब्रह्मानन्द में जो वृति ठान रे ।। 150 ।।

चलन को चाहीं चल साधु संग मेल कर ,
जाँही के मिलाप से ही होवे भली मति रे ।
हाथन को फेरा चाहीं सेवा दान कर जोड़ ,
जाँहीं के करन से ही हाथ हो पुनीत रे ।
बोलन को चाहीं शुद्ध मीठा सत हरि बोल ,
जाँहीं के बोलन से हो राजी भगवन्त रे ।

देखन को चाहीं गुरु संत का दर्शन कर ,
जाँहीं के दर्शन से ही दूर हो विपत्ति रे ।
श्रवण को चाहीं गुरु वेदन का ज्ञान सुन ,
जाँहीं के श्रवण से हो साची सुरति वृति रे ।
गंध को जे चाहीं स्वास सोहम का सुगंध लेह ,
जाँहीं के लेवत होय जोग की जुगति रे ।
जीतन को चाहीं मन इंद्रियो को जीत तुम ,
जाँहीं के जीतन से ही पावो गुहज गति रे ।
पूजन को चाहीं पूज आतमा अखण्ड ब्रह्म ,
जाँहीं के पूजन से ही पाओ पुरुष सति रे ।
कहे टेऊँ ऐसे चाले ताहीं को न काल गाले ,
भेद भ्रम हरे पाय जीवन मुक्तिरे ।। 151 ।।

कपास के पीड़न से तेल नाही निकसत ,
लकीर के कूटने से सांप नहीं मरेंगे ।
सलिल के मथने से माखन न पावे कोई ,
स्वप्ने के भोजन से पेट नहीं भरेंगे ।
कागज की नाव कब नदी पार करे नाहिं ,
मरुथल जल कब प्यास नहीं हरेंगे ।
कहे टेऊँ तैसे शुभ साधन के साधे बिन ,
जगत के भोगन से काज नहीं सरेंगे ।। 152 ।।

छन्दावली

शास्त्र वेद पुराण पढ़े, पुनि बैठ सभा में ज्ञान सुनावे ।
नेम धरे व्रत यज्ञ करे बहु, आग जरे पुनि ध्यान लगावे ।
जंगल तीरथ मांहि फिरे, पुनि ताप तपे बहु जाप जपावे ।
टेऊँ कहे गुरू ज्ञान गहे बिन, लाख करे बहु शान्ति न पावे ।1।

वेद पुरान पढ़े निषिवासर, जाय हिमाचल आप गलावे ।
वृक्ष तले नित वास करे पुनि, पांव नंगे कर तीर्थ जावे ।
मूण्ड मुण्डा कर भेष धरे बहु, दूध अहार करे फल खावे ।
टेऊँ कहे गुरू ज्ञान बिना नर, कैवल्य मोक्ष कभी नहिं पावे ।2।

ना सुख भोग पदारथ भीतर, ना सुख सुन्दर मन्दिर माहीं ।
ना सुख भूमि रसातल अन्तर, ना सुख राज पुरन्दर माहीं ।
ना सुख वेद पुरानन भीतर, ना सुख यन्त्र मन्त्र माहीं ।
टेऊँ कहे सुख काहूँ न दीसत, है सुख आपन अन्तर माहीं ।3।

कोइक मानत भोगन में सुख, कोइक त्यागन में सुख माने ।
कोइक मानत भेखन में सुख, कोइक पन्थन में सुख जाने ।
कोइक मानत तीरथ में सुख, कोइक व्रतन में सुख ठाने ।
टेऊँ कहे सुख और नहीं कहँ, है सुख आतम देव पछाने ।4।

कोइक भाखत ग्रन्थन में सुख, को सुख पाठन माहिं बताये ।
कोइक भाखत कर्मन में सुख, को सुख धर्मन माहिं सुनाये ।

कोइक भाखत गायन में सुख, को सुख भाखत ताल बजाये ।
टेऊँ कहे सुख और नहीं कहँ, है सुख एकहिं आतम ध्याये । 5 ।

को कहता सुख जागन अन्तर, को कहता सुख नींद मंझारे ।
को कहता सुख भ्रमण भीतर, को कहता सुख है निज द्वारें ।
को कहता सुख दौलत में पुनि, को कहता सुख है परिवारे ।
टेऊँ कहे सुख और नहीं कहँ, है सुख एकहिं ब्रह्म विचारे । 6 ।

काहुन को सुख राज सभा महं, काहुन को सुख स्वर्गहिं सूझे ।
काहुन को सुख यान चढ़े पुनि, काहुन को रण अन्दर जूझे ।
काहुन को सुख फूलन सूंघत, काहुन को सुख मन्दिर पूजे ।
टेऊँ कहे सुख और नहीं कहँ, है सुख एकहिं आतम बूझे । 7 ।

दोष कलंक मिटे सबहीं तब, संग सच्चे गुरू का जब कीया,
ताप कलेश रहा नहिं रंचक, पूरन ज्ञान जभी गुरू दीया ।
काम रु क्रोध विकार गये तब, धार जभी निरवेदहिं लीया ।
टेऊँ कहे सब आस मिटी तब, आतम का जब अमृत पीया । 8 ।

शास्त्र वेद पुराण पढ़े, सत्संग बिना निस्तार न होवे ।
तीर्थन माहिं नहान करे, करनी बिन तौ छुटकार न होवे ।
जाप जपे अति ताप तपे पर, प्रेम बिना हरि प्यार न होवे ।
टेऊँ कहे बहु योग करे निज, ज्ञान बिना सुख सार न होवे । 9 ।

जाकर सन्तन के संग में नित, सेव करे तुम पीवहुं प्याला ।
जीत करे मन इन्द्रियन की उर, भीतर का तुम खोलहुँ ताला ।
देवन का तहँ देव ब्राजत, आदि अनादि जु ब्रह्म अकाला ।
टेऊँ कहे गुरू देव प्रसादहिं , दर्शन पाकर होय निहाला ।10।

सार असार विचारत जो जन, सो धन जान सदा जग माहीं ।
आतम सार गहे उर अन्तर, झूठ अनातम धारत नाहीं ।
पूरन आतम को पद पावत, राग न द्वेष न है कछु जाहीं ।
टेऊँ कहे वह जीवन मोक्ष सु, जोहि सके कब काल न ताहीं । 11।

सन्तन के संग ज्ञान बढ़े गुन, पाप रु ताप सभी दुख भागे ।
वेगहिं सार सु कंचन होवत, पारस के संग ही जब लागे ।
चन्दन के संग हो रुख चन्दन, दीपक के संग दीपक जागे ।
सन्तन के संग सन्त सु होवत, टेऊँ कहे नर जो अनुरागे । 12 ।

आतम सार विचार न धारत, ज्ञान यथार्थ को मुख बोले ।
काम रु क्रोध विकार भरे मन, लालच में निषिवासर डोले ।
भोग पदारथ में सुख मानत, वांग कपी नित ही भ्रम भोले ।
टेऊँ कहे यह पाखण्ड लक्षण, चेतन ब्रह्म न देखत चोले । 13 ।

नींद तजे जगदीश जपो मन, दुर्लभ मानव देह सु पाई ।
सन्तन के संग बैठ सदा तुम, राम कथा सुन ले सुखदाई।
मूरख संगति भूल करो नंहि, काक मरालंहि जान गँवाई ।
टेऊँ कहे शुभ धार मती तुम, पाप तजे कर नेक कमाई ।14 ।

मानुष देहि बुद्धि मन इन्द्रिय, राम दया कर तोकहुँ दीना ।
खेचर भूचर जीव चराचर, कीन सभी हरि तोहि अधीना ।
ज्ञान विज्ञान कला धन दे हरि, आपन के सम तोकहुँ कीना ।
टेऊँ कहे जिहँ दीन सभी सुख, ताहिं न ध्यावत मूंढ मलीना । 15 ।

धार दया उर माहिं सदा नर, जीवन मार न पाप करीजे ।
रामहिं व्यापक जान सभी घट, नाहिं किसी संग द्वेष धरीजे ।
कायक वाचक मानस हूं कर, जीवन के सब दुःख हरीजे ।
टेऊँ कहे सुख दे सब को भवसागर से तुम पार तरीजे ।16 ।

काल बड़ा बलवान महा रिपु, ताँ डिग कोय सके न सँभारे ।
राक्षस मानुष देव चराचर, धीर फकीर अमीर न धारे ।
वीर जती अति सूर सती, गुणवान गुनी पुन पण्डित हारे ।
टेऊँ कहे तिन लोकन में नहिं, दीसत को जिहिं काल न मारे ।17।

कोटड़ा छन्द

गुरू भक्ति जे करना चाहो, जीते ही मर जाना रे ।
पांव उठा कर इस मारग में, पीछे फिर न हटाना रे ।
लाख बार जो संकट आवे, तो भी ना घबराना रे ।
कहता टेऊँ नेह गुरू से, लाकर तोड़ निभाना रे । 1 ।

सागर सम गुरू गहर गंभीरा, जांका आर न पारा है ।
गंगा सम गुरू पावन जानो, पाप मिटावत सारा है ।

चंदन सम गुरू शीतल जग की, तप्त बुझावन हारा है ।
शशि के सम गुरूदेव पछानो, अमृत रस की धारा है ।
रवि के सम गुरू दूर करे तम करत ज्ञान उजियारा है ।
धरनी सम गुरु धीरज धारी, जल ज्यों प्रान अधारा है ।
पवन तुल्य गुरू जीवन दाता, नभ ज्यों रहत न्यारा है ।
कहे टेऊँ गुरू कल्प वृक्ष ज्यों, पूरन परम उदारा है ।2 ।

भृङ्गी जैसे सत्गुरू शिष्य को, अपना रूप बनाते हैं ।
धोबी जैसे सत्गुरू पूरन, बुद्धि की मैल हटाते हैं ।
चन्दन सम गुरू शीतल करके, तापन तपति बुझाते हैं ।
गंगा ज्यों गुरू पावन करके, सकले पाप मिटाते हैं ।
केवट सम गुरु भव सागर से, षीघ्र पार लगाते हैं ।
कहे टेऊँ गुरू सूर्य जैसे, अविद्या तिमिर नशाते हैं ।3।

सत्गुरू तेरी शरनी आया, छोड़ और की आसा जी ।
तुझ बिन मेरा और न कोई , तेरा इक भरवासा जी ।
अपने चरण कमल में राखो, जान मुझे निज दासा जी ।
कहे टेऊँ तव दर ना छोडूं, जब लौं घट में स्वासा जी ।4।

डूबत हूं मैं भवसागर में, सत्गुरू पार उतारो जी ।
तीन ताप में जलता हूं मैं, तांको तुरत निवारो जी ।
मन दुश्मन पुनि पांच विकारा, तांको मार निकारो जी ।
कहे टेऊँ गुरू कृपा करके, मेरा जन्म सुधारो जी ।5।

सर्व ओर से होय निरासा, चरन आपके आन गहे ।
लाख चुरासी जोनि चक्र में , फिर फिर हम बहु दूख सहे ।
कृपा कर गुरू अपना कीजे, तरफ तुम्हारे देख रहे ।
कहे टेऊँ गुरू पार करो अब, भव सिन्धु में मैं जात बहे ।6।

सत्गुरू मुझ पर कृपा कर यह, रहे न तन अभिमाना जी ।
स्तुति निन्दा राग द्वेष का, होय न चित में भाना जी ।
सब में एको आतम देखूं, भूल जाय जग नाना जी ।
कहता टेऊँ सुख दुख को मैं, जानूं एक समाना जी ।7।

सत्गुरू मुझ पर कृपा करले, यह मन होय निरासा जी ।
आतम निष्ठा हृदय होवे, छूटे तन अध्यासा जी ।
नाना रूप त्यागे वृति, कर हैं ब्रह्म निवासा जी ।
कहे टेऊँ मैं निर्भय विचरूं, रहे न यम की त्रासा जी ।8।

सत्गुरू अपनी कृपा करके, दीना ब्रह्म विचारा जी ।
ब्रह्म सिन्धू से नाम रूप मय, ऊठे तरङ्ग अपारा जी ।
सर्व जगत यह ब्रह्म रूप है, नहिं कछु उससे न्यारा जी ।
कंचन भूषण कंचनमय हैं, बर्तन मृद अकारा जी ।
लोह रूप है नाना शस्त्र, सूत रूप पट सारा जी ।
कहे टेऊँ गुरू एक लखाया, पांञ्चों भ्रम निवारा जी ।9।

सत्गुरू कृपा करके मुझ को , सोऽहम् शब्द सुनाया है ।
स्वास अश्व पर मोहि चढ़ाकर, सीधे मारग लाया है ।

उस घोड़े ने तीक्षण चल कर, अमरापुर पहुंचाया है ।
कहे टेऊँ तहं स्थिर रह के, परमानन्द मैं पाया है । 10।

सत्गुरू मुझ को यों समझाया, सुख स्वरूप तुम्हारा है ।
अस्ति भाति प्रिय एक पछानो, नाम रूप ते न्यारा है ।
तुम हो पूरन सागर के सम, पावत ना को पारा है ।
तेरी लहरी ब्रह्म विष्णु, शंकर सुर अवतारा है ।
चौरासी लख जीव तरंगा, उपजत तुमहिं मंझारा है ।
जो कुछ दीसत सो सब तुम हो, तेरा सकल पसारा है ।
तुझ बिन दूजा और न कोई, तुम ही सृजणहारा है ।
कहे टेऊँ सब तेरी महिमा, करते शास्त्र सारा है । 11 ।

शौंक शराब पिलाया सत्गुरु, चढ़िया मोहि खुमारा जी ।
मात पिता सुत मीत सभोई, भूल गया परिवारा जी ।
जगत पदार्थ सकले भूले, भूल गया व्यवहारा जी ।
कहे टेऊँ तन मन सब भूला, देखत निज दीदारा जी । 12 ।

गुरू भक्ती का काम कठिन है, विरह अग्नि में जलना रे ।
गुरू आज्ञा के खंडे ऊपर, सीस आपना धरना रे ।
कोई निन्दे कोई वंदे, सभी सहारन करना रे ।
कहे टेऊँ है कठिन निभावन, जीते जग में मरना रे । 13 ।

शिष्यपने का धर्म यही है, गुरू आज्ञा सिर धारे जी ।
अपनी आयु के दिन सारे, गुरू के साथ गुज़ारे जी ।
शिष्य हित कब गुरु कड़वा बोले, दोष दृष्टि नहिं धारे जी ।
कहे टेऊँ गुरू ऐसे शिष्य को, भव सागर से तारे जी ।14 ।

गुरू सूरत को जो शिष्य धारे, निर्मल तांकी वृति है ।
गुरू मन्त्र को जो नित सुमरे, सुन्दर तांकी सुरति है ।
गुरू का ध्यान धरे हृदय में, वरिष्ठ तांकी वृति है ।
कहे टेऊँ गुरू सेव करे जो, उत्तम तांकी कृति है ।15 ।

रे मन सत्गुरू सेवा कीजे, श्रद्धा उर में धारे जी ।
गुरू के मूरत में धर नृति, सुरती शब्द मँझारे जी।
आतम विवेक में धर वृत्ति, खोलो अनुभव द्वारे जी ।
कहे टेऊँ गुरू कृपा से तुम, पाओ पद निर्धारे जी ।16 ।

रे मन सत्गुरू के दरबारे, चाकर होकर रहना जी ।
अहनिशि गुरू की सेवा करके, शीत वात को सहना जी ।
कितना भी को करे निरादर, मुख से कछु ना कहना जी ।
कहे टेऊँ निज मन को मारे, गुरु के द्वारे बहना जी ।17 ।

हे मन मेरे गुरूजनों का, मत कर तूं अपमाना रे ।
निशिदिन तिनकी सेवा करके, कीजे नित सन्माना रे ।
श्रद्धा से तुम आज्ञा मानो, तब होगा कल्याना रे ।
कहे टेऊँ नित नम्र भाव से, चरने सीस झुकाना रे ।18।

हे मन गफलत में बहु सोया, अब तो जल्दी जागो रे।
जग की आशा है दुखदाई, तांको तुरन्त त्यागो रे ।
मानुष तन है मोक्ष दुवारा, भोगों से तुम भागो रे ।
कहता टेऊँ श्रद्धा से तुम, सत्गुरू चरने लागो रे ।19 ।

रे मन जो कुछ देखत हो तुम, सो सब झूठ पसारा है ।
बादल छाया ज्यों थिर नहीं, बिजली ज्यों चमकारा है ।
सुपने के सम मिथ्या भासत, ज्यों मारूथल वारा है ।
कहे टेऊँ ज्यों खेल मदारी, त्यों जग का जिनसारा है ।20 ।

रे मन तेरा मेरा तज के, इस जग माहीं रहना जी ।
मोह ममत मद मत्सर त्यागे, द्वैत भाव को दहना जी ।
आशा तृष्णा चिन्ता तजके, ज्ञान गुणों को गहना जी ।
कहे टेऊँ सब संसा मेटे, शान्ति भवन में बहना जी ।21 ।

हे मन आतम का कर चिन्तर, ध्यान हृदय में धरना रे ।
सत्गुरू के निज सार शब्द को, स्वासों स्वास सिमरना रे ।
झूठे तन का तज अभिमाना, जीते जग में मरना रे ।
कहे टेऊँ परमानन्द पाये, जीवन मुक्ति विचरना रे ।22।

हे मन ममता मान त्यागे, गीत राम के गाओ रे ।
निर्जन बन में बैठ अकेला, गुरू का शब्द कमाओ रे ।
हृदय मन्दिर में थिर होके, ज्ञान का दीप जगाओ रे ।
कहे टेऊँ हरि दर्शन करके, परमानन्द को पाओ रे ।23।

हे मन मेरा मान वचन यह, छोड़ मलिन अभिमाना रे ।
तन मन धन से कर्म करो शुभ, भूल न पाप कमाना रे ।
सब जीवों को नित सुख देवो, किसकी दिल न दुखाना रे ।
कहे टेऊँ सब माहिं व्यापक, देखो इक भगवाना रे ।24 ।

हे मन मेरा मान वचन यह, अक्यार्थ मत बोलो रे ।
पहले अपने हृदय अन्दर, सोच तराज़ी तोलो रे ।
सत्य वचन पुनि मधुर होय जो, तांको मुख से खोलो रे ।
कहता टेऊँ तब ही तेरा, होवे बोल अमोलो रे ।25 ।

रे मन निश्चय मान लेहु तुम, सन्त वचन सुखदाई है ।
जिसने माना सन्त वचन को, परम शान्ति तिन पाई है ।
ताँकी वृति नाना त्यागे, आतम माहिं समाई है ।
कहता टेऊँ सन्त वचन की, महिमा ग्रन्थन गाई है ।26 ।

रे मन सबका मोह त्यागो, मोह महा विकराला है ।
मोह कुटम्ब से कीना जिसने, मोह तिसी को घाला है ।
अर्जुन जैसे वीर बहादुर, फसे मोह के जाला है ।
कहे टेऊँ जो मोह त्यागे, सो जन रहत सुखाला है ।27 ।

रे मन अब कर तुरत तैयारी, आखिर तुझको जाना है ।
जगत बखेरा सर्व त्यागो, फिर यह तन नंहि पाना है ।
मरन समय को दे न चितावन, जात अचानक प्राना है ।
कहे टेऊँ हरि नाम सुमरले, कहते सन्त सुजाना है ।28 ।

हे मन अब ही सावधान हो, सत्कर्मों को कीजे रे ।
जिन कर्मों से शास्त्र रोके, तामें चित्त नहिं दीजे रे ।
दीन दुखियों की सेवा करके, जग में यश को लीजे रे ।
कहे टेऊँ गुरू शरणी जाकर, राम नाम रस पीजे रे ।29 ।

रे मन अवगुण देख आपना, पर के नाहिं निहारो जी ।
अपने अवगुन प्रकट करके, ताँको तुरन्त निकारो जी ।
पर के अवगुन कभी न खोलो, वैर विरोध विसारो जी ।
कहे टेऊँ इस भांति चलन से , तेरा होय उद्धारो जी ।30 ।

रे मन किससे वैर न कीजे, वैर देत दुख भारा जी ।
हिरण्यकश्यप ने वैर किया तब, नरसिंह नख से डारा जी ।
कंस वैर कृष्ण से कीना, ताँके प्राण निकारा जी ।
रावण वैर राम से कीना, रण में ताँको मारा जी ।
दक्ष प्रजापति वैर रखा जब, शिवगण ताहिं संहारा जी ।
कहे टेऊँ जे हित को चाहो, त्यागो वैर विकारा जी ।31 ।

रे मन जे सुख चाहो जग में, होय गरीब गुज़ारो जी ।
कटू वचन को कहे आप से, तुम मृदु वचन उचारो जी ।
जे कोई तुझ मारन आवे, आप उसे मत मारो जी ।
कहे टेऊँ तुम सब को सुख दे, क्षमा को मन धारो जी ।32 ।

रे मन राग न करना किससे, साक्षी होकर रहिये जी ।
दुख सुख जोई भगवत भेजे, ताँको सिर पर सहिये जी ।

पाँच पाँच पुन पाँच तीन दो, ब्रह्म अग्नि में दहिये जी ।
टेऊँ अविद्या ताला तोड़े, ब्रह्म भवन में बहिये जी ।33 ।

रे मन अजहूं तू ना समझत, बहुत तुझे समझाया है ।
सत् वस्तु ना तुम को भावत, झूठ पिछे ललचाया है ।
तीन काल में जो नहिं तेरा, तिस पर दाव जमाया है ।
कहे टेऊँ इस मूरखता से, तुमने बहु दुख पाया है ।34 ।

रे मन मेरा समझ सवेरा, समझन का यह वेला है ।
बहुत जनम के बिछुड़े हो तुम, अजहूं फिरत अकेला है ।
मनुष्य जनम में पारब्रह्म से, करना तुझ को मेला है ।
कहे टेऊँ जो अब न मिला तुम, फिर तो मिलन दुहेला है । 35 ।

रे मन मेरा कहना मानो, देर नहीं कछु करना जी ।
अब हीं चल कर निर्जन बन में, ध्यान ब्रह्म का धरना जी ।
जहाँ न कोई देखे तुमको, देश उसी में चरना जी ।
कहे टेऊँ कर आश न किसकी, जहँ आवे तहँ परना जी । 36 ।

रे मन अब ही साफ़ कहो तुम, है क्या आश अमीरी की ।
पूज कराना चाहत हो क्या, करके प्यासा पीरी की ।
आश नहीं जे राखत हो तुम, फिर करते दिलगीरी की ।
कहे टेऊँ सब आश तजे अब, लेवो मौज फकीरी की ।37 ।

रे मन अपनी कलना त्यागे, आनन्द माहिं गुज़ारो जी ।
थोड़ा खाना थोड़ा सोना, वाणी अल्प उचारो जी ।
हरी नाम का सुमरन करके, सकले पाप निवारो जी ।
कहे टेऊँ कर सत् वीचारा, संसा भ्रम संहारो जी ।38 ।

रे नर जाति पाति नहिं तेरी, नाहीं वरन आचारा है ।
तुम तो आतम असंग अलेपा, तीनों तन से न्यारा है ।
काल तुझे कब मार न सकता, तू तो अखण्ड अपारा है ।
कहे टेऊँ तुम इन्द्रिय अगोचर, पावत ना को पारा है ।39 ।

सोच समझ के जग में प्यारे, काम करो तुम सारे जी ।
जे नर काम करत बिन सोचे, वे दुख भोगत भारे जी ।
मूरख कहते सब जन उसको, जो न करत वीचारे जी ।
कहे टेऊँ वीचार मिले यह, सन्त गुरू के द्वारे जी ।40 ।

जे तुम चाहत दुख से छुटना, सोच समझ जग में विचरो ।
जे तुम चाहत निर्भयता को, सहित विवेक विराग धरो ।
जे तुम चाहत नर्क से बचना, पाप कर्म कब नाहिं करो ।
जे तुम भव से तरना चाहो, कहे टेऊँ गुरू शरण परो । 41 ।

अपने दिल का ताला खोलो, चाबी लेकर प्यारे जी ।
है गुरूदेव पास यह चाबी, लीजे श्रद्धा धारे जी ।
ब्रह्म विद्या की चाबी से तुम, अविद्या खोल किवारे जी ।
कहे टेऊँ पा आतम धन को, सुखी होय निर्धारे जी ।42 ।

पाँच तत्व का तन तो जड़ है, आतम कछु नहिं करता है ।
कौन जाय के धर्म पुरी में, लेखा यम का भरता है ।
लाख चोरासी जोनि चक्र में, कौन जाय के परता है ।
कहे टेऊँ ये गुरू से पूछो, अन्तकाल को मरता है । 43 ।

भव सागर यह गहर गँभीरा, जांका आर न पारा जी ।
काम क्रोध मच्छ मागर तामें, तृष्णा वेग करारा जी ।
मोह नीर के भ्रम चक्र में, डूबत जीव अपारा जी ।
कहता टेऊँ बाचे सोई, जो ले गुरु आधारा जी । 44 ।

चित्त का चिन्तन जोई त्यागे, सोई पूर्ण त्यागी है ।
इत उत भोगन चाह न जांको, सो पूर्ण वैरागी है ।
जिसकी लगन राम से लागी, पूर्ण सो अनुरागी है ।
कहे टेऊँ जिस सतगुरू मिलिया, सोई जन बड़भागी है ।45 ।

बाल अवस्था में बुद्धि नाहीं, जीव रहत अज्ञानी रे ।
तरूण अवस्था में विषयों संग, कर्म करत शैतानी रे ।
वृद्धापन में तृष्णा बाढ़े, परवश होता प्रानी रे ।
कहे टेऊँ यह तीन अवस्था, गुरू बिन दुख की खानी रे। 46 ।

जैसे जीव अंधारी करके, सर्प रज्जू में जानत है ।
जब नर दीप जलाकर देखत, केवल ही रज्जु मानत है ।
जैसे अविद्या तम के माहीं, जग को सत्य बखानत है ।
कहे टेऊँ गुरू ज्ञान दीप से, पूरण ब्रह्म पछानत है । 47 ।

सुन रसना तू शिक्षा मेरी, पल पल राम पुकारो री ।
झूठे कड़वे वचन कहो मत, साचे मृदु उचारो री ।
धीरे धीरे थोड़ा बोलो, सब का हित वीचारो री ।
कहे टेऊँ इस रहति रहन से, हो सन्मान तुम्हारो री ।48 ।

त्याग तुझे जो पीछे करना, सो तुम अब हीं त्याग करो ।
जोई पदार्थ तेरा नाहीं, तामें तुम ना राग करो ।
त्याग बिना सुख ना कब होवे, ताँते तुम वैराग करो ।
कहे टेऊँ जे हित को चाहो, आतम में अनुराग करो ।49 ।

दरिद्रता हो नाश दान से, ताँते तुम नित दान करो ।
अविद्या होवे नाश ज्ञान से, ताँते ले गुरू ज्ञान खरो ।
दुर्गति होवे नाश शील ते, ताँते शील स्वभाव धरो ।
टेऊँ दुख हो नाश भाव ते, ताँते मन हरि भाव भरो ।50 ।

सत्संग बिन को कथा न सुन है, कथा बिना हो ज्ञान नहीं ।
ज्ञान बिना अज्ञान मिटे ना, ताँ बिन हो मोह हान नहीं ।
मोह मिटे बिन हरि चरणों में, लागे रंचक ध्यान नहीं ।
कहे टेऊँ हरि ध्यान लगे बिन, होवे कब कल्यान नहीं ।51 ।

आशा कर कर जनम गंवाया, आशा पूरण नाहिं भई ।
बहुत पदार्थ पाय लिया तुम, अजहूँ ना चित्त चाह गई ।
सुख कारण बहु काम किया तुम, अन्त उन्हों दुख दात दई ।
कहे टेऊँ सब आशा त्यागो, जग को जानो स्वप्न मई ।52 ।

बाज़ीगर की बाजी जैसे, झूठा यह जग जानो रे ।
जैसे स्वपना मिथ्या तैसे, झूठा जग पहिचानो रे ।
तीन काल में ब्रह्म सत्य है, यह निश्चय उर आनो रे ।
कहे टेऊँ तज झूठे जग को, साचा ब्रह्म पछानो रे ।53 ।

जो इस जग की आशा करता, सो बहुते दुख पाता है ।
आशा बन्धन से वो बाँधा, जोनि चोरासी जाता है ।
जन्म मरण के महा चक्र से, कोय न ताहिं छुड़ाता है ।
कहता टेऊँ बार बार सो, रो रो के पछताता है ।54 ।

भली भाँति इस जग को जाना, तिल्सम को जु तमाशा है ।
स्वपने के सम झूठा है यह, झूठी इसकी आशा है ।
सर्व पदार्थ मिथ्या भासत, जैसे नील अकासा है ।
कहे टेऊँ इस कारण से मैं, भव से भया उदासा है ।55 ।

सच की प्रीति सदा सुखदाई, सच से प्रीती करिये जी ।
जिस प्रीती से सुमति मिलत है, सर्व काज जग सरिये जी ।
सच की सेवा करके निशिदिन, द्वन्द्व दूख को हरिये जी ।
कहे टेऊँ तुम सच को हरदम, अपने हृदय धरिये जी ।56।

जिस हरि अपनी कृपा करके , दीना मानुष चोला रे ।
तिस हरि का तुम श्रद्धा धारे, सुमरो नाम अमोला रे ।
जिसने तुम को सब सुख दीना, तिसका हो जा गोला रे ।
कहे टेऊँ ले हरि की शरणी, पाओ धाम अडोला रे ।57।

भगवत की यह अदभुत लीला, देख हर्ष मुझ आया है ।
पाँच तत्वों से तन यह रचकर, तामें आप छिपाया है ।
योगिन योगकला से तिसका, प्रत्यक्ष दर्शन पाया है ।
कहता टेऊँ दर्शन करके, आवागमन मिटाया है ।58 ।

प्रभु की है अति प्रबल माया, जिंह सबको वश कीना है ।
जोगी पण्डित विरक्त मौनी, सब मोहित कर लीना है ।
माया किसको छोड़त नाहीं, करत दीन ते दीना है ।
कहे टेऊँ किस हरि कृपा से, इसके छल को छीना है ।59 ।

नाम रूप है मिथ्या माया, यह थिर ना कब होती है ।
बढ़ना घटना आदत इसकी, चलती है कब सोती है ।
अद्‌भुत खेल खेलके जग में, हंसती है कब रोती है ।
कहे टेऊँ यह मोहनी माया, पारब्रह्म की ज्योती है ।60 ।

पहले मतलब समझ कर्म का, फेर कर्म को करना रे ।
कर्म जिसी का मर्म न जानो, ताँ पीछे ना परना रे ।
जिन कर्मों का फल सुखदाई, तामें चित्त को धरना रे ।
वेद विहित कर्मों को करके, कहे टेऊँ मल हरना रे ।61 ।

यह मन पाप पुण्य को जानत, पर न पुण्य को करता है ।
कर्म जिसी का फल दुखदाई, ध्यान उसी का धरता है ।
सन्त गुरू का वचन न मानत, स्वेच्छा से चरता है ।
कहता टेऊँ इस कारण से, जन्म मरण में परता है ।62 ।

जब चित्त लपट जात भोगों में, तब अवगुण बढ़ जाता है ।
अवगुण के बढ़ जाने से नर, घोर नरक को पाता है ।
जब चित्त लागत राम भजन में, तब देवी गुण आता है ।
कहे टेऊँ शुभ गति को पा सो, सुख स्वरूप समाता है ।63 ।

सुन्दर देह को देख न फूलो, इक दिन ये जर जायेगी ।
माया का अभिमान तजो यह, अन्त काम नहिं आयेगी ।
नारी से नहिं नेह लगावो, नाता नाहिं निभायेगी ।
कहे टेऊँ इस जग की प्रीती, जनम जनम भ्रमायेगी ।64 ।

जो कछु दीसत सोई स्वपना, स्वपना सब संसारा है ।
मात पिता सुत त्रिया स्वपना, स्वपना सब परिवारा है ।
सात द्वीप नव खण्ड है स्वपना, स्वपना सकल पसारा है ।
वायु वहनी धरनी स्वपना, स्वपना रवि शशि तारा है ।
लेना देना सब ही स्वपना, स्वपना जग व्यवहारा है ।
कहता टेऊँ बन्धन स्वपना, स्वपना मुक्ति द्वारा है ।65 ।

तीन काल में जगत बना नहिं, भ्रम करे यह भासत है ।
जैसे रजत सीप में नाहीं, सूरज कर प्रकासत है ।
जैसे सर्प रज्जू में नाहीं, तम कर सोय त्रासत है ।
कहे टेऊँ ज्यों नींद दोष से, स्वपना सत्य विभासत है ।66 ।

जग साचा वा मिथ्या है ये, मुख से कहा न जाता है ।
ज्ञान दृष्टि से देखत हूं जब, रंचक नजर न आता है ।
इन नैनों से देखत हूं तो, जग सब को भरमाता है ।
कहे टेऊँ वेदान्त इसी को, अनिर्वचनीय कह गाता है ।67 ।

जो जो वस्तु अनिर्वचीय है, सो सब कल्पित जानो रे ।
सर्प रज्जू में रजत सीप में, चोर ठूंठ सम मानो रे ।
कल्पित वस्तु अधिष्ठान मय, यह निश्चय उर आनो रे ।
कहे टेऊँ त्यों यह संसारा, ब्रह्म रूप पहिचानो रे ।68 ।

लोकन के तुम तरफ न देखो, निन्द करे को नेकी रे ।
हरि मार्ग में चलते चलना, धर के धीर विवेकी रे ।
खुद मस्ती में मस्त रहो तुम, विचरो एकाएकी रे ।
कहे टेऊँ सब चिन्त तजे तुम, ले इक हरि की टेकी रे ।69 ।

खुद मस्ती को मन में धारे, मस्त राम बन जाओ रे ।
राग द्वेष की नगरी त्यागे, निर्भय नगर बसाओ रे ।
शान्ति सबर के महल बैठके, आसन अचल लगाओ रे ।
कहे टेऊँ कर आतम में रति, सुख स्वरूप समाओ रे ।70 ।

स्वांग फकीरी का सिर पहने, चाल फकीरी चलना रे ।
आगे कदम बढ़ा करके तुम, पीछे को नंहि वलना रे ।
पांच विषय की तृष्णा त्यागे, इश्क आग में जलना रे ।
कहे टेऊँ सब एक जानके , द्वैत भाव को दलना रे ।71 ।

साधू जन सब को सुख देवत, किस की दिल न दुखावत है ।
सब घट में हरि देख व्यापक, सब को सुख पहुंचावत है ।
नीच ऊँच की दृष्टि त्यागे, सब से प्रेम बढ़ावत है ।
कहे टेऊँ सम दरशी साधू, भगवत के मन भावत है ।72 ।

साधू सूरा सोई कहये, मन का कुटम्ब संहारे जो ।
लेके शस्त्र ब्रह्म ज्ञान का, ममता माता मारे जो ।
लोभ पिता का सीस उतारे, पाप पुत्र परिहारे जो ।
कुमति कन्या का शिर काटे, तृष्णा तिय को डारे जो ।
भैन भ्रांति भेद भ्राता, दोनों वेग विडारे जो ।
कहता टेऊँ सहित वासना, मन का मूल उखारे जो ।73 ।

अमर लोक से संत पधारे, जग में ले अवतारा जी ।
निश्कामी निर्मान निसंगी, निर्पक्ष नभ ज्यों न्यारा जी ।
परम विरागी हरि अनुरागी, त्यागी परम उदारा जी ।
अपने शिर पर दूख सहारे, करते पर उपकारा जी ।
नीति धर्म के मारग चल कर , सब का करत सुधारा जी ।
जोय मुमुक्षु मोक्ष इच्छा से, आवत ताहिं द्वारा जी ।
तांको आतम ज्ञान सुनाके, करते भव सिंधु पारा जी ।
कहे टेऊँ तिन संतन ऊपर, जाऊँ मैं बलिहारा जी ।74 ।

जे मन हरि से मिलन चहो तो, संतो से मेलाप करो ।
लेकर नाम हरी का निर्मल, निशदिन तांका जाप करो ।

जाप जपे मन मैल मिटाये, हरि का दर्शन आप करो ।
कहे टेऊँ हरि दर्शन से तुम, दूर सर्व संताप करो ।75 ।

संत वचन श्रद्धा से सुनकर, मन के संशय शोक हरो ।
संकल्प विकल्प त्याग करे पुनि, आतम का नित ध्यान धरो ।
अपना आतम रूप पछाने, गोपद सम भव सिंधु तरो ।
कहे टेऊँ तुम तीन लोक में, जीवन मुक्ती हो विचरो ।76 ।

पाप छुड़ाने के हित जबहीं, साधू वचन उचारत हैं ।
संतो का सुन सत् उपदेशा, पापी नर नहिं धारत हैं ।
उलटा संतो की कर निन्दा, तांके दोष निहारत हैं ।
कहे टेऊँ ऐसे पापियों को, घोर नरक यम डारत है ।77।

अगम देश को आतम ज्ञानी, पांव बिना चल जाते हैं ।
नैन बिना ही रूप निहारत, कर बिन कर्म कमाते हैं ।
कान बिना आवाज़ सुनत हैं, बिन जिह्वा गुन गाते हैं ।
नाक बिना सुगंधी को सूंघत, कहे टेऊँ सुख पाते हैं ।78 ।

आतम ज्ञानी संत हमेशा, आतम रंग में राते हैं ।
बाँध सके को ना बंधन तिहं, स्वच्छन्द आते जाते हैं ।
खुद मस्ती में मस्त रहें नित, नेह न किससे लाते हैं
कहे टेऊँ नित निर्भय होके, गीत शिवोऽहम् गाते हैं ।79 ।

देश अगम का देख निज़ारा, संत रहत मतिवाले हैं ।
खोल खबर किस नाहिं सुनावत, रहते भोले भाले हैं ।
काहूं से ना नाता जोड़त, सबसे रहत निराले हैं ।
कहे टेऊँ हर हालत में वे, रहते सदा सुखाले हैं ।80 ।

अमर देश में जे जन जाते, वे ना कबहूं मरते है।
पाप पुण्य का लेश न तामें, नहिं तंह लेखा भरते है ।
धर्मराय तहं आय सके ना, काल दूर से डरते हैं ।
कहे टेऊँ तहं संत हमेशा, स्वइच्छा से चरते हैं ।81 ।

ब्रह्म देश में ब्रह्म बिराजे, उसका अजब निज़ारा है ।
उसी देश में डर ना कोई, नहिं को मारन हारा है ।
उसी देश में आनन्द बहुता, बहती अमृत धारा है ।
उसी देश में सूर्य चंद्र बिन, कहे टेऊँ उजियारा है ।82 ।

ब्रह्म नगर में ब्रह्म ज्ञानी, ब्रह्म की चर्चा करते है ।
ब्रह्मानन्द को पा करके तहं, जीवन मुक्ति विचरते हैं ।
ब्रह्म ज्ञान का अमृत पीकर, नहीं काल से डरते हैं ।
कहे टेऊँ वे ब्रह्मज्ञानी, ध्यान ब्रह्म का धरते हैं ।83 ।

आज हमारे भाग जगे हैं, संत सजन घर आये जी ।
दर्शन परसन कर संतों का, आनन्द उर में छायेजी ।
मिलकर सखियां मंगल गाया, जय जय कार मनाये जी ।
कहे टेऊँ मैं संत सेव कर, मन वांछित फल पाये जी ।84 ।

जैसा जिसका कर्म भोग है तैसा तिसको पाना है ।
जिसी देश में भोग जीव का, अवश्य तहां ही खाना है ।
प्रारब्ध का भोग न मिटता, कहते वेद पुराना है।
कर्म भोग की प्रबलता को, टेऊँ सबने माना है ।85 ।

अपने को सब भला कहावत, बुरा न कोय कहावे जी ।
मनुष्य भला सो जग में जानो, जो निज आप गंवावे जी ।
जिसने अपना आप गंवाया, सो हरि के मन भावे जी ।
कहे टेऊँ जो आपा त्यागे, सो जन सुख को पावे जी ।86 ।

जो नर भोगों में कर प्रीती, भव में खावत गोता है ।
मानुष जनम अमोलक हीरा, कौड़ी बदले खोता है ।
खान पान में दिवस गंवाये, सारी राती सोता है ।
वृद्ध भये भी संत न सेवत, प्यारा लागत पोता है ।
पुण्य साबुन को छोड़ पाप के, कोयलों से पट धोता है ।
कहता टेऊँ ऐसा मूरख, जन्म जन्म में रोता है ।87 ।

ना हरि मिलता बहुत पढ़न से, ना हरि मिले पढ़ाने से ।
ना हरि मिलता कथा करन से, ना हरि मिलता गाने से ।
ना हरि मिलता जप तप कीने, ना बहु देव ध्याने से ।
ना हरि मिलता व्रत नेम से, ना तीर्थों पर जाने से ।
ना हरि मिलता यज्ञ होम से, ना बहु देते दाने से ।
कहता टेऊँ मिलता हरि है, केवल प्रेम बढ़ाने से ।88 ।

उसी देव का ध्यान धरो तुम, जो सब जग का ज्ञाता है ।
सब जीवों को प्यारा लागत, जिससे सब का नाता है ।
अपने आप में स्थित रहता, जो आता नंहि जाता है ।
कहे टेऊँ जो अगम अगोचर, पार न कोई पाता है ।89 ।

उसी देव का कर दीदारा, जोई सब को देखत है ।
गुप्त प्रगट जो पाप पुण्य को, अन्तर बाहर पेखत है ।
नभ ज्यों निर्मल निर्गुन जामें, रूप रंग ना रेखत है ।
कहे टेऊँ सो रूप तुम्हारा, महिमा जासु विशेषत है ।90 ।

उसी देव को जान जिज्ञासु, जोई जानन हारा है।
मन बुद्धि इन्द्रियों से मिल जोई, करत सर्व व्यवहारा है।
जाग्रत स्वपन सुषोपति माहीं, जो नित खेलन हारा है।
कहे टेऊँ सो रूप तुम्हारा, वेदन यही उच्चारा है। 91।

अब तक निज स्वरूप न जाना , तन को आप पछाना रे।
तीन काल में सो तुम ना है, जो कुछ निज को माना रे।
चमड़ी रसना घ्राण नहीं तुम, ना तुम नेत्र काना रे।
कहे टेऊँ निज रूप लखे अब, पाओ पद निर्बाना रे। 92।

आना जाना तुझमें ना है, ये तन आता जाता है।
छोटा मोटा घटता बढ़ता, जन्म मरन तन पाता है।
जितने नाते जग के दीसत, वे सब तन का नाता है।
कहे टेऊँ ये निश्चय करिये, तू इस तन का ज्ञाता है। 93।

आतम तुमसे मिला हुआ है, भिन्न नहीं कब होता है।
भूल भ्रम से जान जुदा क्यों , हाय हाय कर रोता है।
जाग ऊठके देख उसी को, मोह नींद क्यों सोता है।
कहे टेऊँ उस देखे बिन क्यों, भव में खाता गोता है। 94।

साक्षी चेतन निर्गुण आतम, सब घट माहिं निवासी है।
अंदर बाहर करत उज्याला, सदा स्वयं प्रकासी है।
पार ब्रह्म पूरन परमेश्वर, अजर अमर अविनासी है।
कहे टेऊँ सो रूप तुम्हारा, सर्व सुखों की रासी है। 95।

आप कौन हो कहां से आये, कहां तुझे फिर जाना रे।
स्वइच्छा से आये हो या, भेजा तुझ भगवाना रे।
किस कारण तुम आये जग में, सब का उत्तर सुनाना रे।
कहे टेऊँ जो नहिं जानत तो, गुरु से ले यह ज्ञाना रे। 96।

मैं हूँ कौन कहां से आया, मर कर मुझ कहं जाना है।
जीव ईश्वर ब्रह्म क्या है, क्या मुझ कर्म कमाना है।
काल कौन क्या मन का रूपा, क्या पुनि रूप जहाना है।
कहे टेऊँ सब खोल सुनाओ, तुम गुरु परम सुजाना है। 97।

अमर लोक है देश हमारा, जहाँ दिवस नहिं राती है।
भेष पंथ का लेश नहीं तहँ, नाम रूप नहिं जाती है।
किसने इसको नाहिं बनाया, यह तो आदि सनाती है।
कहे टेऊँ सो पहुंचे ताहीं, जिसको दी गुरु पाती है। 98।

ब्रह्म सिंधु है अगम अपारा, जांका आर न पारा है।
जांकी लहरी ब्रह्मा विष्णू, शंकर सुर अवतारा है।
चौरासी लख जीव चराचर, जिसमें तरंग अपारा है।
कहे टेऊँ सो सागर तुम हो, गुरु ये दिया विचारा है। 99।

निराकार जो हो साकारा, तो भी बिन आकारा है।
जग के अन्तर बाहर पूरन निर्गुरु गुरु आधारा है।
अज अविनाशी आनन्द राशी, साक्षी सृजणहारा है।
कहता टेऊँ निश्चय जानो, सो निज रूप हमारा है। 100।

जैसा पहले तैसा हूं अब, ना बूढ़ा ना बालक हूँ।
मात पिता से ना मैं जन्मिया, ना खलकत ना खालक हूँ।
ना मैं अंदर ना मैं बाहर, चलता ना संचालक हूं।
कहता टेऊँ साफ कहूं मैं, ना पलता ना पालक हूं। 101।

साक्षी चेतन सर्व समाया, तिस बिन जगा न खाली है।
घृत दूध में मधुर ईख में, ज्यों मैंदी में लाली है।
ज्यों घट मठ में नभ है व्यापक, रवि शशि माहिं उज्याली है।
कहे टेऊँ तुम जान उसी को, जो सब जग का वाली है। 102।

जो कुछ दीसत सो सब है प्रभु, तिस बिन और न कोई है।
नाम रूप यह जगत बना सो, वासुदेव भी वोही है।
अस्ति भाति पुनि प्रिय रूप जो, सत चित आनंद सोई है।
कहे टेऊँ गुरु भ्रम मिटाया, जहं देखूं तहं ओई है। 103।

आपहिं सो प्रभू पुरुष बना है, आप बना है नारी जी ।
आपहिं सो प्रभु ठाकुर बनिया, आप बना पुजारी जी।
आप ब्राह्मण क्षत्री शूदर, वैश्य बना व्यापारी जी।
कहे टेऊँ सब आप बना है, एही दृष्टि हमारी जी। 104।

अपनी शक्ति से ही प्रभु ने, रचिया सकल पसारा है।
भांति भाँति के रंग उसी में, अदभुत अंग अकारा है।
बाजीगर ज्यों बाजी लाये, आपे देखन हारा है।
कहे टेऊँ हरि खेल खेलके, रहते आप न्यारा है। 105।

अजब अजायब खेल प्रभु का, देख अजब मुझ आता है।
रक्त बिंदु से इस नर तन को, कैसे सुंदर बनाता है।
पुतलीगर ज्यों स्वइच्छा से, सब को नाच नचाता है।
कहे टेऊँ यह देख देख के, मेरा मन विस्माता है । 106।

उसी देव को पूजत हूँ मैं, जिसका दर्जा आला है।
सबके अंदर व्याप रहा जो, सबसे रहत निराला है।
देह बिना जो परम देवता, जांका नाम अकाला है।
कहे टेऊँ जिस ध्यान धरन से, मिलता धाम विशाला है। 107।

उसी देव को मानत हूं मैं, जिसकी यह सब माया है।
इस माया के अन्तर जिसने, अपना आप छिपाया है।
सतगुरु अपनी कृपा करके, उसका दरस दिखाया है।
कहे टेऊँ मैं दर्शन करके, परमानन्द को पाया है। 108।

अजब अजायब खेल तुम्हारा, देख अजब मुझ आया है।
सबसे न्यारा रहत सदा तुम, सबके माहिं समाया है।
तुम देखत जग तोहि न देखे, कैसा खेल बनाया है।
कहे टेऊँ यह महिमा लख मैं, तुझ को सीस निवाया है।109।

नैनों से जो निरखत है ले, रसना से रस नाना जी।
गंध घ्राण से जो सूँघत है, श्रवण सुने वख्याना जी।
चमड़ी से जो स्पर्श करता , गावत मुख से गाना जी।
कहे टेऊँ तिस आतम का है, हृदय में स्थाना जी। 110।

ब्रज बदन में इन्द्रिय गोपी, बुद्धि राधिका रानी है।
आतम कृष्ण परम मनोहर, जांकी अकथ कहानी है।
रिल मिल के सब रास मंडल में, खेलत खेल महानी है।
कहे टेऊँ इस लीला भीतर, मेरी सुरति समानी है। 111।

तन अयोध्या में सुरती सीता, आतम राम प्यारा जी।
सुरती सीता के सम सेवत, आतम राम उदारा जी।
सुरती सीता आतम हरि से, शोभत देह मंझारा जी।
टेऊँ सुरती आतम से मिल, पावत सूख अपारा जी। 112।

चमत्कार को नमस्कार कर, मानत मानव सारे जी।
चमत्कार जिन जिन मे रहता, वे हैं जग अवतारे जी।
उनका दर्शन है दुखभंजन, देवे सूख अपारे जी।
कहे टेऊँ वे अति कृपालू, भव सागर से तारे जी। 113।

ज्ञान योग ये दोनो मारग, अमर लोक को जाते है।
जे जन जिस मारग से जावत, आतम घर वे पाते हैं।
एक बार तहं जावत हैं जे, फेर लौट नहिं आते हैं।
कहे टेऊँ सब बंधन तोड़े, निज स्वरूप समाते हैं। 114।

दर्शन मात्र है यह दुनिया, ज्यों मारुस्थल पानी रे।
साँप रज्जू जिमि रजत सीप में, ठूंठ चोर पहिचानी रे।
जैसे सोया स्वपना देखे, जागे लाभ न हानी रे।
कहे टेऊँ जग मिथ्या तैसे, ऐसे कहते ज्ञानी रे। 115।

सोल्हा ससे सजन तुम धारो, पहले सेव कमाना रे।
दूजा मन मे श्रद्धा धारो, तीजा सत्संग जाना रे।
चौथा सत्गुरु कर लो पंचवाँ, सुमरन कीजे स्याना रे।
छठवां जगमें करो सादगी, सतवां सत्य बखाना रे।
आठवां हृदय धर संतोषा, ग्यार्वां दे सन्माना रे।
बारवां सहन शीलता धारे, तेरवां सार उठाना रे।
चौद्वां सोच समझ के चलिये, पन्द्रवां सम उर लाना रे।
सोलवां लाये सहज समाधी, कहे टेऊँ सुख पाना रे। 116।

वृति आतम खोजन चाली, तब मन भया उदासा जी।
कहा इसे मत खोजो भैना, छोड़ मिलन की आसा जी।
इसके देखत तेरा मेरा, होगा तुरत विनासा जी।
कहे टेऊँ अब वापस आओ, रिलमिल करूं विलासा जी। 117।

मन कहता हो जगत पदार्थ, भोगूं भोग अपारा जी।
चेतन बोले आसा त्यागो, भोग रोग भंडारा जी।
मन कहता हो मान बड़ाई, धन का बहु विस्तारा जी।
चेतन बोले रह निर्मानी, धन है दूख अगारा जी।
मन कहता हो सुन्दर मन्दिर, गुलशन बाग बहारा जी।
चेतन बोले दो दिन जीवन , करना तोहि गुजारा जी।
मन कहता हो कुटुम्ब कबीला, पुत्र मित्र परिवारा जी।
चेतन बोले चले न संग को, सबसे करो किनारा जी।
मन कहता हो राज सिंहासन, हुकम चलाऊँ भारा जी।
चेतन बोले ना सुख इसमें, राज नरक का द्वारा जी।
मन कहता हो वस्त्र भूषण, करूं देह श्रृंगारा जी।
चेतन बोले छिन भंग है तन, जल कर होवे छारा जी।
मन कहता हो चोरी यारी, निन्दा झूठ विकारा जी।
चेतन बोले पाप छोड़के, चालो श्रेष्ठ अचारा जी।
मन कहता हो दुर्जन संगति, सैर करूं संसारा जी।
चेतन बोले संत संगति कर, यांते हो निस्तारा जी।
चेतन का ये सुन उपदेशा, कहे टेऊँ मन धारा जी।
चल कर चेतन के मार्ग पर, अपना किया उद्धारा जी।118।

नारी की मति निन्दा करिये, देवी के सम नारी है।
ये तो लच्छमी पारवती पुनि, सावित्री अवतारी है।
ब्रह्मा विष्णु शंकर आदी, देवों को भी प्यारी है।
राम कृष्ण पुनि महा मुनियों ने, इनकी ऊप उचारी है।
भीष्म भीम द्रोण अर्जुन जे, भये इनसे बलकारी हैं।

गोपीचन्द भर्तृहरी गोरख, योगी जनने हारी है।
ध्रुव प्रह्लाद विभीषण आदी, भक्तों की महतारी है।
कहे टेऊँ ये बुरी न मानो, सृष्टि रची इन सारी है। 119।

कहु माया कुभ कर्मी कैसे, पापिन नाम कहाया है।
कहाँ कहाँ तुम विचर रही हो, कौन मकान बनाया है।
कौन गुरु पुनि पती तुम्हारा, कौन पुत्र तव जाया है।
कहता टेऊँ किस युग माहीं, जन्म आपने पाया है। 120।

त्रेता युग में जन्म हमारा, तीन लोक भरमाया है।
द्वापर युग में फेर दुवाई, झंडा द्वैत झुलाया है।
सात द्वीप में विचरत हूँ मैं, ममता महल बनाया है।
गुरु हमारा कलीकाल पुनि, पति देव मन पाया है।
पाँच पुत्र बलवान हमारे, जिन सबको भटकाया है।
कामदेव सुत शूरवीर ने, मछंदर को मचलाया है।
नारद मुनि को मोहित करके, इन्द्र आदि उलझाया है।
क्रोध पुत्र दुर्वासा जैसे, बहुते मुनी तपाया है।
ऐसी आग लगाई उसने, खून अज्ञानिन खाया है।
लोभ पुत्र दुर्योधन आदी, कौरव नास कराया है।
बड़े बड़े पूजारी पण्डित, लोभ बहुत लटकाया है।
मोह पुत्र महाभारत माहीं, अर्जुन आदि रुआया है।
ज्ञानी ध्यानी वीर विज्ञानी, फन्दे मांहि फसाया है।
महापुत्र अहंकार बली ने, रावण सीस कटाया है।
तपस्वी त्यागी बहुत विरागी, इसने आन गिराया है।
इस कारण मैं इसी जगत में, पापिन नाम धराया है।
सतियुग में है सत् का वासा, पावं वहां नहिं पाया है।
माया बोली सुनो स्वामिन, तुमको साच बताया है।

कहे टेऊँ माया का कहना, यह मैं साफ सुनाया है। 121।
सद्गुरु शरण गही मैं तेरी, जान मुझे तुम दासी जी।
बहुत काल से भटक रही हूं, पाय जोनि चौरासी जी।
ना है मेरा मात पिता को, ना को दास न दासी जी।
रहने के हित नगर न कोई, नहिं को रक्षक तासी जी।
साथ सहोदर भ्रात भैन नहिं, सासु ससुर पति पासी जी।
वस्त्र न भूषण धाम सहेली, ना सेजा सुख रासी जी।
नहिं शुभ सन्तति सम्पति ना है, ना भई तीरथ वासी जी।
सैर करन के कारण कोई, ना है बाग़ विलासी जी।
भूखी प्यासी निशदिन रहती, नहिं को आनन्द आसी जी।
कष्ट विघ्न दुख द्वन्द्व हरो तुम, हे गुर ज्ञान प्रकासी जी।
ब्रह्म ज्ञान की शिक्षा देके, अलख लखा अविनासी जी।
सुरति कहे सुन विनय हमारी, कहे टेऊँ कट फासी जी। 122।

सुन सुरताँ यह बोध हमारा, हर चिन्ता चित्त वाली जी।
पास तुम्हारे हैं सब साधन, जे पूछे तुम आली जी।
मात पिता तव शक्ती चेतन, जिनने तुमको पाली जी।
पांच प्रान हैं दास तुम्हारे, दासी इन्द्रिय अटाली जी।
पांच पच्चीस का नगर तुम्हारा, देव करत रखवाली जी।
शुभ गुण साधन भ्राता तेरे, सुख दाता बलशाली जी।
दया दीनता क्षमा भैना, ताँसे चल शुभ चाली जी।
ब्रह्म विद्या ससुरी गुरु ससुरा, दोनों जान सुखाली जी।
सुन्दर शब्द पती से मिलकर, पावो सूख अकाली जी।
विद्या वस्त्र मुद्रा भूषण, पाकर होय उजाली जी।
अष्ठ कमल षट चक्र धाम तव, तामें विचर मराली जी।

रिद्धि सिद्धि को जान सहेली, ताँसे खेल खुशाली जी।
सेज समाधि सुंदर तेरी, ताहिं रमो रंगवाली जी।
सुनिये शुभ सन्तान आपनी, शान्ति सुता सुख वाली जी।
ज्ञान विज्ञान है पुत्र तुम्हारे, जासें डर जम काली जी।
श्वास अमोलक चार पदार्थ, जानो अपनी माली जी।
गंगा यमुना इड़ा पिंगला, तीर्थ करो विशाली जी।
सप्त भूमिका सैर करे तुम, निर्भय रहो निराली जी।
भजनानंद ब्रह्मानन्द का तुम, भोग भोग बरहाली जी।
कहता टेऊँ तोड़े पडदा, खोलो अनुभव ताली जी। 123।

इसी जीव ने पूर्व जन्म में, जैसे कर्म कमाया है।
उन कर्मों का इसी जन्म में, सुख दुख फल को पाया है।
और किसी का दोष नहीं है, जो बोया सो खाया है।
कहे टेऊँ तुम निश्चय करिये, ग्रन्थों ने यह गाया है। 124।

सन्त वेद के वचन यथार्थ, श्रद्धा से जो धारत है।
भेद भ्रम पुनि सब संशय को, मनन करे वह टारत है।
आप तरे सो भवसागर से, औरों को पुनि तारत है।
कहे टेऊँ क्या और कहूं वह, यम का लेखा वारत है। 125।

अपने को तुम आप जगाओ, और न तोहि जगावेगा।
मोहि नींद से तब जागेंगे, तब सब दुख मिट जावेगा।
निज आतम का दर्शन करके, परम शान्ति को पावेगा।
कहे टेऊँ सब भेद हरे तुम, साक्षी ब्रह्म समावेगा। 126।

रे मन मेरे मान छोड़कर, सब जीवों से प्यार करो।
एक राम है सब घट माहीं, हृदय में यह भाव भरो।
क्रोध ईर्ष्या वैर विरोध पुनि, राग द्वेष मदमान हरो।
कहे टेऊँ निर्दोष रहो तुम, निर्भय हो जग मांहि चरो।127।

जो जन जग में जीते मरहैं, फेर तिसे क्या मरना है।
माया से तर पार गया जो, फेर तिसे क्या तरना है।
जिसने हरि का स्मरन कीना, फेर तिसे क्या करना है।
कहे टेऊँ निज ध्यान धरा जिस, फेर तिसे क्या धरना है।128।

आतम में नहिं आना जाना, नहिं विछुडण नहिं मेला है।
बहुत रूप वह धारण करता, बहुत नहीं न अकेला है।
नहिं निर्गुण नहिं सिर्गुण है वह, नहिं सतगुरु नहिं चेला है।
कहे टेऊँ वह सर्व अतीता, खेल रहा नहिं खेला है।129।

चंद्र सूर ना तहं प्रकाशे, ना तम ना उजियारा है।
रैन दिवस की तां गम नाहीं, ना तिथि पक्ष न वारा है।
जीव ईश पुनि नाम रूप नहिं, नहिं माया विस्तारा है।
कह टेऊँ कुछ कह न संकू मैं, अद्‌भुत सोय अपारा है।130।

आतम की यह अद्‌भुत चर्चा, को जन विरला करता है।
जिसको सुनकर जीव अज्ञानी, अपने मन में डरता है।
परम विवेकी इसको सुनकर, बहुत हर्ष मन भरता है।
कहे टेऊँ निज आनन्द पा सो, शोक मोह से तरता है।131।

शहल बाज को चिड़िया ले गई, जहां न धरनी अकासा जी।
बैठ वहां पुनि तांको खाया, मिट गई भूख प्यासा जी।
फेर आयकर अपने घर में, निर्भय किया निवासा जी।
कहे टेऊँ अति आनन्द पाया, हृदय भया हुलासा जी। 132।

एक अचम्भा बन में देखा, देखत ही विस्माय रहा।
मूसे बबर शेर को पकड़ा, रो रो सिंह चिलाय रहा।
छुटना चाहत छूटत नाहीं, बार बार अकुलाय रहा।
कहे टेऊँ वह भूल भ्रम में, महा कष्ट को पाय रहा। 133।

राज भोग सुख त्यागे जिनने, अपना आप जगाया है।
गिरि कन्दरा में बैठ अकेले, आतम ध्यान लगाया है।
मन इन्द्रियों को जीते सहजे, ब्रह्म स्वरूप समाया है।
कहता टेऊँ धन धन से जिन, परमानन्द को पाया है। 134।

हे मन अपना मतलब मुझको, खोल खोल के कहिये रे।
इक पल भी तुम थिर न रहत हो, क्या अब तुझको चहिये रे।
अगर आश है आनंद की तो, जग की इच्छा दहिये रे।
कहे टेऊँ पद पाय सनातन, परम शान्ति को लहिये रे। 135।

तुझमें मुझमें एक आत्मा, दूजा कोई नाहीं रे।
सोई साक्षी चेतन चमकत, योनि चराचर माहीं रे।
ज्ञान दृष्टि ले सतगुरु से तुम, देखो जाहीं ताहीं रे।
कहता टेऊँ पाय उसी को, द्वन्द्व दूख नहिं जाहीं रे। 136।

यह जग जानो सैनेमा सम, स्वपने ज्यों प्रकाशत है।
मारूथल में पानी जैसे, रजु में सर्प विभासत है।
सिप मे चांदी खेल मदारी, दिल को बहुत हुलासत है।
कहे टेऊँ यह कुछ भी ना है, भ्रम करे सब भासत है। 137।

सद्गुरु कृपा करके मुझको, देवो निर्भय दाना जी।
जीवन मुक्ति होकर विचरूं, सुख दुख माहिं समाना जी।
अन्तर बहार एक लखूं मैं, भूल जाय जग नाना जी।
कहता टेऊँ हृदय अंतर, धरहूं आतम ध्याना जी। 138।

हरि मिलने का साधन सुनकर, डरते जीव अज्ञानी है।
सम दम श्रद्धा उपशम धारे, रहना नित निर्मानी है।
तन मन धन का मोह त्यागे, करना सिर कुर्बानी है।
कहे टेऊँ को गुरुमुख ज्ञानी, पावत पद निर्बानी है। 139।

हरि की भक्ती पूर्व पुण्यते, किस किस जन को मिलती है।
हरि की भक्ती निश्चल रहती, दुख में भी ना हिलती है।
हरि की भक्ती बीज चन्द्र ज्यों, दिन दिन बढ़ती चलती है।
कहता टेऊँ हरि की भक्ती, गुरु कृपा से फलती है। 140।

सत्संग सुन्दर बगीचे सम, जे जन तिसमें जाते हैं।
ताप क्लेश क्रोध की गर्मी, तामें बैठ हटाते हैं।
देखत शुभ गुण की फुलवाड़ी, चित में आनन्द पाते हैं।
कहे टेऊँ खा ज्ञान फलों को, तृष्णा भूख मिटाते हैं। 141।

पैंतीस अक्षरी छन्द

अकार अपना आप पछानो, गुरु से ले निज ज्ञाना रे।
अपने आप पछाने बिन ये, मानुष पशुहिं समाना रे।
जिस जन को है ज्ञान तत्व का, मनुष्य वही बुद्धिमाना रे।
कहे टेऊँ निज ज्ञान बिना को, पाय न पद निर्बाना रे ।। 1 ।।

इकार ईश जगत का जो है , तांका नाम उचारो रे।
मन के संकल्प विकल्प सारे, नाम अग्नि में जारो रे।
श्रद्धा से हरी नाम जपे तुम, आवागमन निवारो रे ।
कहे टेऊँ हरि सुमरण करके, पावो मोक्ष दुवारो रे ।। 2 ।।

उकार ओउम् का कर सुमरण, श्वास श्वास से प्यारे जी।
ओउम् नाम है परम सु पावन ,सकले पाप प्रहारे जी।
ओउम् नाम है सुख का सागर, सबहीं दूख निवारे जी।
कहे टेऊँ है ओउम् जहाज़ा , भव सागर से तारे जी ।। 3 ।।

ककार कर्म करो शुभ निश दिन, पाप कर्म नहिं करना रे।
पाप कर्म का फल दुख जानो, तांसे हरदम डरना रे।
पुण्य कर्म का फल सुखदाई , ऐसा निश्चय धरना रे।
कहे टेऊँ शुभ कर्म करे तुम, पाप मैल को हरना रे ।। 4 ।।

खकार खटने का यह वेला, कर ले नाम व्यापारा रे।
और धंधे सब झूठे जग के, कर देखो वीचारा रे।
राम नाम का वणिज सचा जो, लेवो तुम वणिजारा रे।
कहे टेऊँ कब पड़े न घाटा , होवे लाभ अपारा रे ।। 5 ।।

गकार गोविंद नाम उच्चारे, सर्व सुखों को पाओ रे।
गोविंद नाम हरे पापों को, जप तिहं पाप मिटाओ रे।
गोविंद नाम नाव में चढ़कर, भव जल से तर जाओ रे।
कहे टेऊँ गोविंद को रट के, गोविंद माहिं समाओ रे।।6।।

घकार घट घट राम जानके, सबसे प्रेम बढ़ाओ रे।
राम रूप सब जीवों को लख, निश दिन सीस निवाओ रे।
वैर विरोध छल वल को छोड़े, सबकी सेव कमाओ रे।
कहे टेऊँ घृणा को त्यागे, सबसे रिलमिल जाओ रे।। 7।।

ङकार ङियाना गुरु से पाए , धारो ह्रदय भाई रे ।
पूरब पुण्य प्रतापे तुमने, मानुष देही पाई रे।
तामें पाप कर्म नहिं करना, करले नेक कमाई रे।
कहे टेऊँ हरि नाम सुमरके, पावो पद सुखदाई रे।। 8।।

चकार चाल चलो चेतन की, मन की रहत न रहना रे।
निंदा किसकी कबहुं न करना, मुख से झूठ न कहना रे।
किसके दिल को नाहीं दुखाओ, सब कुछ शिर पर सहना रे।
कहे टेऊँ तुम सहन शील का, पावो गल में गहना रे।।9।।

छकार छल वल सबहीं त्यागे, सरल भाव को धारो रे ।
ध्यान धरे चित अचल बनाये, विक्षेपता को टारो रे।
साध संगति में चित्त को थिर कर, हरि का नाम उच्चारो रे।
कहे टेऊँ ये साधन साधे , पावो मोक्ष द्वारो रे।। 10।।

जकार जग को झूठा जानो, झूठा सर्व व्यवहारा है।
झूठे मात पिता सुत दारा, झूठा सब परिवारा है।
झूठे जगके सर्व पदार्थ, झूठा सब व्यापारा है।
कहे टेऊँ इक सत् है आतम, जग का जो आधारा है।। 11।।

झकार झक झक बक बक छोड़े, अन्तर्मुख हो जाओ रे।
शांति महल में थिर कर बैठो , मन को नाहीं डुलाओ रे।
राम नाम के सुमिरन माहीं, अपना चित्त लगाओ रे।
कहे टेऊँ मन इन्द्रिय जीते, सर्व सुखों को पाओ रे।। 12।।

ञकार ञाण भुलाओ तन की, धार ब्रह्म का ध्याना रे।
अन्तर्मुख हो लाय समाधी, पावो आतम ज्ञाना रे।
ज्ञान बिना नहिं मुक्ती होवे, कहते सन्त सुजाना रे।
कहे टेऊँ ले ज्ञान गुरू से, हर ले तम अज्ञाना रे।। 13।।

टकार टहल करो सन्तों की, श्रद्धा मन में धारे जी।
अपना जीवन सफल बनाओ, संतन वचन विचारे जी।
चरनामृत का पान करो नित , संतन पाद पखारे जी।
कहे टेऊँ सन्तों के संग से, पावो शांति भंडारे जी।। 14।।

ठकार ठोक बजा कर देखो, स्वार्थ का संसार रे।
स्वार्थ बिन कोई नहिं किसका, कर लो मन विचारा रे।
स्वार्थ के सब मित्र सम्बंधी, स्वार्थ का परिवारा रे।
कहे टेऊँ बिन स्वार्थ के हैं, सन्त गुरु कर्त्तारा रे।। 15।।

डकार डरो काल से हरदम, इक दिन सबको मारेगा।
काल बड़ा बलवान रिपू है, तेरे प्रान निकारेगा।
उनसे कोई बच नहिं सकता, आखिर आय संहारेगा।
कहे टेऊँ सो इससे बचता, जो गुरु वचन विचारेगा ।। 16 ।।

ढकार ढोरन जैसी जग में, चाल चलो नहिं प्यारे जी।
मनुष्यों का तुम स्वभाव धारे, विचरो जगत मंझारे जी।
हरी नाम को सुमरो हरदम , जो भव पार उतारे जी।
कहे टेऊँ गुरु सन्त सेव कर, पाय पदार्थ चारे जी ।। 17 ।।

णकार णास जगत को जानो, तांसे करो किनारा रे।
मोह ममत ना राखो किससे, तज तन का अंहकारा रे।
दैवीगुण को हृदय धारे, छोड़ो सर्व विकारा रे।
कहे टेऊँ ले शरनी हरि की, भव जल से हो पारा रे ।। 18 ।।

तकार तेरा मेरा त्यागो, ये दोनों दुखदाई रे।
तेरा मेरा रावण करके, अपनी लंक गंवाई रे।
तेरा मेरा कौरव करके, मर गये सकले भाई रे।
कहे टेऊँ तेरा मेरा कर, करते सर्व लड़ाई रे ।। 19 ।।

थकार थोड़ा जीवन जग में, आखिर तुझ को मरना है।
पाप कर्म क्यों करते हो तुम, बदला उसका भरना है।
ये मन मे सोचत ना कबहूं, क्या मुझको अब करना है।
कहे टेऊँ क्या तुमको मूरख, जम के पाले परना है ।। 20 ।।

दकार द्वेष न कीजे किससे, मुदिता मन मे लाओ रे।
दुश्मन को भी आदर देके, अपना मीत बनाओ रे।
भले बुरे का भाव मिटाके, समता माहिं समाओ रे।
कहे टेऊँ हित सबका करके, हृदय शांती पाओ रे।। 21।।

धकार धर्म सनातन को तुम , अपने मन मे धारो रे।
सूरा होके लड़ो धर्म हित, कायरता को टारो रे।
धर्म रक्षा के कारण अपना, तन मन धन सब वारो रे।
कहे टेऊँ यह धर्म सनातन, सबसे जान उदारो रे ।। 22।।

नकार नर तन दीना जिसने, तिस हरी को न भुलाओ जी।
जिसने दीना अंग अमोलक, तिस हरि को मन ध्याओ जी।
जिसने दीना मन बुद्धि प्राना,तिस हरि पर बलि जाओ जी।
कहे टेऊँ जिस दीना सब सुख, तिस हरि के गुण गाओ जी।।23।।

पकार प्रेम करो तुम प्रभु से, प्रेम प्रभु को भाता है।
प्रेम देख निज भक्तों का हरि, तांके घर में आता है।
भक्तों का हरि रूखा टुकड़ा, रुचि रुचि भोग लगाता है।
कहे टेऊँ हरि प्रेम देख के, भक्तों का हो जाता है।। 24।।

फकार फांस कटो ममता की, जग को जान जंजाला रे।
जिसने राखा बहुत अटाला, तिसका है मुँह काला रे।
दुखी होत नर ममत मोह से, निर्मम होय सुखाला रे।
कहे टेऊँ जो ममता त्यागे, सो नर होत निहाला रे।। 25।।

बकार बहुत जन्म तुम सोया, अब जागन की वारी रे।
सोवन से तुम बहु दुख पाया, गाफ़िल तज गँवारी रे।
जागी जप ले नाम हरी का, जो तेरा हितकारी रे।
कहे टेऊँ है भक्ति हरी की, भव से तारन हारी रे ।। 26 ।।

भकार भेद भ्रम को हर ले, सत्गुरु से ले ज्ञाना रे।
गुरु का ज्ञान करे उजियाला, हरके तम अज्ञाना रे।
गुरु का ज्ञान कटे जम फांसी , मेटे दूख महाना रे।
कहे टेऊँ गुरु ज्ञान बिना कब, होवे ना कल्याना रे ।। 27 ।।

मकार मुक्ति ज्ञान से होवे, ज्ञान गुरु से लीजे रे।
श्रद्धा से गुरु सेव करे तुम, दक्षिणा में शिर दीजे रे।
सार शब्द का स्मरण करके, अपना आप लखीजे रे।
कहे टेऊँ पा ब्रह्म बोध को , निर्भय होय रहिजे रे ।। 28 ।।

यकार यार बसे दिल भीतर, तांका कर दीदारा रे।
सुंदर सूरत मोहिनी मूरत, सब जग मोहन हारा रे।
तांका दर्शन देख देखके, हो जाओ मतिवारा रे।
कहे टेऊँ कर प्रीति उसी से, जो है सबका प्यारा रे ।। 29 ।।

रकार रमता राम पछानो, सब घट खेलन हारा है।
सबके अंतर सबके बाहर, मिला सर्व से न्यारा है।
सब देवों से देव बड़ा जो, अंग न जिस आकारा है।
कहे टेऊँ सो तूं है आतम, गुरु का एह इशारा है ।। 30 ।।

लकार लाल लखो निज आतम, यह तो लाल अमोला है।
तोल सके ना इसको कोई, यह तो अतुल अतोला है।
तीन काल मे डोलत नाहीं, यह तो अखण्ड अडोला है।
कहे टेऊँ कछु बोलत नाहीं, यह तो अटल अबोला है।।31।।

वकार वासुदेव है व्यापक ,यह निश्चय उर धारो रे।
ज्यों सब भूषण में है सोना, पट में सूत निहारो रे।
ज्यों सब घट में है इक माटी, तरंगों में जल सारो रे।
कहे टेऊँ त्यों सब में पूरन, साक्षी सिरजण हारो रे।।32।।

शकार शेर केसरी होके, घास क्यों तुम खाता है।
अजा संग क्यों मैं मैं करते, शरम नहीं तुझ आता है।
तुम तो शेर जंगल का राजा, काहे को घबराता है।
कहे टेऊँ निज रूप निहारो, डरके क्यों दुख पाता है।।33।।

सकार सोऽहं जाप जपो नित, निज स्वरूप पछानो रे।
सो वाचक है पार ब्रह्म का, अहं जीव को जानो रे।
जीव ब्रह्म है एक स्वरूपा, भेद भ्रम को भानो रे।
कहे टेऊँ मैं ब्रह्म रूप हूँ, यह निश्चय उर आनो रे।।34।।

हकार हरदम ऐसे बोलो, मैं आतम अविनाशी हूं।
जन्म मरन दुख सुख से न्यारा, चेतन चिद आकाशी हूं।
अस्ति भाति प्रिय रूप अनादी, अजर अमर सुख राशी हूं।
कहे टेऊँ मैं सत् चित् आनंद, साक्षी स्वयं प्रकाशी हूं।।35।।

बारह मास छंद

चैत्र चार शिक्षा चित धारो, इक हरि नाम ध्याओ रे।
दूजा याद करो मृत्यु को, मन से नाहिं भुलाओ रे।
तीजा पाप कर्म नहिं करना, निज शुभ कर्म कमाओ रे ।
कहे टेऊँ चौथा कर सत्संग , परमानंद को पाओ रे ।। 1 ।।

विसाख वासुदेव को हृदय , सुमर सुमर सुख पाना रे।
वासुदेव से प्रीति लगाके, जीवन सफल बनाना रे।
वासुदेव की भक्ति करके, भव सागर तर जाना रे।
कहे टेऊँ धर ध्रुव भक्त ज्यों, वासुदेव का ध्याना रे ।। 2 ।।

ज्येष्ठ जाप जपो निज हरि का, हरी नाम हितकारी है।
हरी नाम का स्मरण करके, गनिका स्वर्ग सिधारी है।
हरी नाम जप अजामेल ने, पाई मुक्ति भारी है।
कहे टेऊँ हरि नाम जपन की, महिमा अपर अपारी है ।। 3 ।।

आषाढ़ अमृत वेले उठकर , जप ले हरि का नामा रे।
भजन हेत हरि नर तन दीना, करो भजन का कामा रे।
भाव भक्ति को हृदय धारे, हरि सुमरो निष्कामा रे।
कहे टेऊँ हरि भजन करे तुम, पाओ सब सुख धामा रे ।। 4 ।।

सावन सेवा कर सतगुरु की, गुरु चरने चित लाओ रे।
गुरु की मूरत मन मे धारे, मन को नाहिं डुलाओ रे।
गुरु मन्तर का सुमरण करके, श्वासा सफल बनाओ रे।
कहे टेऊँ गुरु ज्ञान विचारे, मन का भरम मिटाओ रे।।5।।

भादौ भक्ती नौधा करके, हरि का दर्शन कीजे जी।
श्रवन सुमरण कीर्तन करके,पद सेवन मन दीजे जी।
दासी भक्ति सखा अरु वंदन, पुनि अर्चन कर लीजे जी।
कहे टेऊँ पुनि आतम अर्पन, भक्ती में मन भीजे जी।।6।।

अश्वनि आसा छोड़ जगत की, करो अलख की आसा रे।
जग की आसा है दुखदायी, ताँसे होय निरासा रे।
हरि की आसा है सुखदायी, करे सर्व दुख नासा रे।
कहे टेऊँ ये कर वीचारा, जग से रहो उदासा रे।। 7।।

कार्तिक काम क्रोध दुश्मन को, ज्ञान खड्ग ले मारो रे।
बाप इन्हों का मन बलवाना, शीघ्र ताहिं संहारो रे।
मन का कारण है अज्ञाना, पल में तां प्रहारो रे।
कहे टेऊँ है दुर्गुण जेते, सब को मार निकारो रे।। 8।।

मार्गशीर्ष मुक्ति को पाओ, साधे साधन चारा रे।
श्रवण मनन निदिध्यासन करके, करले तत्त्व विचारा रे।
अन्तर्मुख अभ्यास करे तुम, देखो निज दीदारा रे।
कहे टेऊँ सब कलना त्यागे, पाओ आनन्द अपारा रे।।9।।

पोष प्रेम का भूखा प्रभु है, प्रेम उसी से पाओ रे।
प्रेमा भक्ति प्रभु को भावे, तांते प्रेम बढ़ाओ रे।
झूठा नाता जग का तोड़े, हरि से हेत लगाओ रे।
कहे टेऊँ लौं हरि से लाये नाता तोड़ि निभाओ रे।। 10।।

माघ मगन हो हरी भजन में, गोविंद के गुन गाना रे।
बाजा तबला ढोल बजाके, तामें ताल मिलाना रे।
गीत हरि के गाय गायके, तन का भास भुलाना रे।
कहे टेऊँ तज तीन लजा को, प्रीतम को तुम पाना रे।।11।।

फागुन फूलो हरी भक्ति से , साध संगति में जाओ रे।
हरि की कथा सुनो कानों से, मुख से हरी गुन गाओ रे।
प्रेम भाव से सेवा करके, जीवन सफल बनाओ रे।
कहे टेऊँ हरि कृपा से तुम, चार पदारथ पाओ रे।।12।।

सात दिवस छंद

सोम सदा सुख रूप आप हरि, द्वंद्व दूख से न्यारा जी।
तुम हो अजर अमर अविनाशी, साक्षी सिरजन हारा जी।
सर्व व्यापक समर्थ तुं ही, सब जग का आधारा जी।
कहे टेऊँ निशदिन ही मेरा, तुझको नमस्कारा जी।। 1।।

मंगल मंगलमय हरि तुम हो, मंगल करने हारा जी।
जगत्पति जगदीश स्वामी, पालत सब संसारा जी।
सब देवों में देव बड़ा तुम, पूजन योग पियारा जी।
कहे टेऊँ कर जोड़ करूँ तुझ, वंदन बारम्बारा जी।। 2।।

बुध बोध स्वरूप आप हरि, सबके जाननहरा जी।
सबके अंतर बाहर तुम हो, निर्गुण निर आकारा जी।
भक्त जना के रक्षा हित तुम, धारत बहु अवतारा जी।
कहे टेऊँ लख लीला तेरी, करहूं तोहि जुहारा जी।। 3।।

बृहस्पति व्यापक विष्णु विश्व में, आप विश्वम्भर स्वामी जी
सबको देखत सबको जानत, सबके अंतरयामी जी ।
तुम हो पूरन ब्रह्म स्वरूपा, तुम हो पूरन कामी जी।
कहे टेऊँ है मेरी तुमको, निशदिन पाद नमामी जी।। 4।।

शुक्रवार हो शंकर रूपा, सबका करत कल्याना जी।
ब्रह्म समाधी में चित्त जोड़े, रहत आप मस्ताना जी।
ब्रह्म ज्ञान का कर उपदेशा, देत अभय का दाना जी।
कहे टेऊँ मैं वन्दन करहूं, तुमको हर भगवाना जी।। 5।।

शनिवार हरि श्रद्धा धारे, सब तव पूजा करते हैं।
नाम तुम्हारा जपकर निशदिन, सर्व दूख को हरते हैं।
प्रेम भाव भक्ति से भरकर, ध्यान तुम्हारा धरते हैं।
कहे टेऊँ प्रणाम करे हम, शरन तुम्हारी परते हैं।। 6।।

रविवार तुम राम स्वरूपा, सबका नित प्रकासी हो।
पारब्रह्म परमेश्वर तुम प्रभु , चेतन चिद् आकासी हो।
जन्म मरण से न्यारे तुम ही, अजर अमर अविनाशी हो।
कहे टेऊँ मैं करहूँ वंदन, तुम ही आनन्द रासी हो ।। 7 ।।

धनाश्री छंद।

रे जीव खोजे तन एह देखो,
रक्त बिन्दु से ही पैदा जु होया।
निज आतमा अंतर लोप करके,
तन देख सुंदर क्यों मूंढ़ मोह्या।
जिस देह को निशदिन काल खावे,
कर मोह तामें निज लाल खोया।
कहे टेऊँ सतगुरु से ज्ञान लेके,
नहीं आप जाना नहीं पाप धोया।। 1 ।।
कहे मात कृष्णा सुन पूत मेरा,
जग सूख ले तुम क्यों दूख सहता।
घर बैठ के अपना काम करलो ,
ज्यों जगत करता है वेद कहता।
सुन मात मेरी कहूं बात साची,
मै काल के दंड से बहुत डरता।
कहे टेऊँ देखा मैं सोच कर के,
सुख नाहीं जग में हरि ध्यान धरता।। 2 ।।

हो औषधी रोग असाध्य की ना,
अजा कंठ कुच से नहीं दूध पाना।
तिय बांझ से कब ना पूत होवै,
मुख गुंग से कब ना होय गाना।
नहीं पिंगला नर कब चाल साके,
हो नौद में ना सूए निशाना।
कछु पीठ पर कब ना घाव होवे,
नहीं खेत ऊसर में होय दाना।
ला सौ मना साबुन कोयलों को,
नही होवन्दे ऊजल साच जाना।
रेत पीड़ते कब ना तेल निकसे,
कब होय सीधा नहीं पूंछ स्वाना।
कब बांस ना चंदन वास लागे,
कब शूम से होय ना पुण्य दाना।
कहे टेऊँ दे त्यों विरंचि शिक्षा,
बुद्धिहीन को कब ना होय ज्ञाना।। 3 ।।
मूल कमल माहीं गुरु गणेश पाहीं,
चरण कमल से शिष्य चित्त लाइये जी।
लिंग कमल डेरा घर ब्रह्मा केरा,
नाभ कमल से नाम चलाइये जी।
पाय विष्णु वासा करके अभ्यासा,
हृदय कमल शिव शंख बजाइये जी।
कंठ कमल के पास है हंस का वास,
सच ग्रहण करके झूठ जलाइये जी।

कमल त्रिभणा द्वार ज्योति ज्ञान उजियार,
निश निर्जन केरी मिटाइये जी।
उलट इड़ा पिंगला करो एक सुरला,
भँवर सुषुम्ना सेज बिछाइये जी।
कमल सुन सकड़े रहो तांहि अकड़े,
निज निरंजन नाम को ध्याइये जी।
चल दशम द्वारे रह रिणुंकारे,
मिल मौज मस्ती की पाइये जी।
देख देह बिन देव पाओ पुरुष अभेव,
चौदह लोक सम ज्योति जगाइये जी।
कहे टेऊँ भेद तोड़ जीव ईश मति छोड़,
इक ब्रह्म आनंद समाइये जी।।4।।
चचा चेत माई सुन सीख सोल्हा,
इक चरण पति के चित्त लाइये जी।
दूजा चार घड़ियां जाग रैन पिछली,
तीजा चाह से चक्की चलाइये जी।
चौथा चाय चाडी दही को विलोड़ो,
पंचा चौके को साफ बनाइये जी।
छठा चूल्हा जलाय बनाए भोजन,
सतां चीज सब वंडके खाइये जी।
अठां आठ घड़ियाँ तूं चलाय चरखा,
नवां चीर को सीव धुलाइये जी।
दसां कूट के चावल साफ करना,
ग्यारीं चुगली चोरी हटाइये जी।

बारवीं चित की छोड़ चन्चलताई,
तेरवीं चिन्ता चाह गलाइये जी।
चौदवां चार साधन सिखलाय पुत्रां,
पंद्रा चेतना हृदय जगाइये जी।
तीन काल जम जाल कट कहे टेऊँ,
सोलवां चित्त चेतन से लगाइये जी।।5।।

शैर

जीव ईश्वर की उपाधि दूर तांको कीजिये,
सार चेतन भाग की तुम एकता कर लीजिये।
ब्रह्म मैं हूँ जान ऐसे भेद भ्रांति छीजिये,
कहत टेऊँ ज्ञान इससे ब्रह्म आनंद लीजिये।। 1।।

कोटि सूरज कोटि चन्दा खूब रोशन भी करे,
कोटि बिजली कोटि बतियां कोटि दीपक भी जरे।
कोटि पावक प्रलय की पुनि तेज पूरन भी धरे,
कहत टेऊँ ज्ञान के बिन उर अंधेरा ना टरे।। 2।।

कोटि मन चन्दन रगड़ के बदन पर लेपन करे,
कोटि ओले बरफ वाले बादलों से गिर परे।
कोटि हिम गिरी शरद ऋतु कर जगत ठंडी से भरे।
कहत टेऊँ ज्ञान के बिन तप्त मन की ना टरे ।। 3।।

कोटि जप तप कोटि साधन कोटि तीरथ भी करे।
कोटि मंजन कोटि पूजन कोटि संजम भी धरे।
कोटि यंतर कोटि तंतर कोटि मन्तर भी पढ़े।
कहत टेऊँ ज्ञान बिन नर मोक्ष सीढ़ी ना चढ़े।। 4।।

जो गुरु को नाहीं माने कृतघ्न तिहं जानिये।
जो करे अपमान गुरु का मुग्ध तांको मानिये।
जो करे निंदा गुरू की सो निन्दक पहिचानिये।
टेऊँ तिस नादान के कब पास में ना ठानिये।। 5।।

क्यों करत निंदा गुरू की ए निन्दक नादान तूं।
क्यों निंदा कर जगत में नर सहत है अपमान तूं।
क्यों निंदा कर नाश चाहत आपना हैवान तूं।
टेऊँ निन्दक नरक जाते देख पढ़के पुरान तूं।। 6।।

नगर जिस नर को निकाले नृप तां रख लेत है।
नृप जिस नर को निकाले देव तां घर देत है।
देव जिस नर को निकाले विष्णु तांको राखते।
टेऊँ जिसको गुरु निकाले तिहं न को रख साकते।। 7।।

फूल फुले बाग जिसमें भंवर चल तहं जावते।
दीप जलता जिस जगह पर पतंग मिल तहं धावते।
होय मेवे जिस वृक्ष में पंछी पग तहं पावते।
कहत टेऊँ प्रेम है जहँ राम चल तहं आवते।। 8।।

शुभ कर्म से सूख मिलता यज्ञ से सुर धाम जी।
कुभ कर्म से दूख मिलता पाप से जम ठाम जी।
तप करन से राज मिलता ज्ञान से आराम जी।
कहत टेऊँ प्रेम से त्यों आय मिलता राम जी।। 9।।

भूत मंतर भूत बांधे पशुन को ना बांधते।
सर्प मन्तर सर्प साधे पंछिन को ना साधते।
देव मन्तर देव वश कर मनुष्य बंध ना साकते।
कहत टेऊँ प्रेम मन्तर सबको वश कर राखते।। 10।।

छुडाके बादशाही से रहावे लाक ये किस्मत।
गिराके ताज शाही का बनावे खाक ये किस्मत।
बड़े बलवान वीरों को बनावे दास ये किस्मत।
कहे टेऊँ स्वंतंतर को लगावे फास ये किस्मत।। 11।।

सभी इंसान दुनिया के जिसी कदमो में झुकते थे।
लखे बांदी जंजीरो से जिसी हुकमों से छुटते थे।
बहुत खिजमत लिये चाकर जिसी के पास होते थे।
फटी किस्मत कहे टेऊँ वही गलियों में रोते थे ।। 12।।

अथाह जो नीर सागर का यतन से वो भी सुक सकता।
चले जो वेग से वायु यतन से वो भी रुक सकता।
कठिन मेरू बड़ा गिरि जो यतन से वो भी झुक सकता।
मगर जो लेख किस्मत का कभी टेऊँ न मुक सकता।।13।।

पास पैसा नाहीं जिसके ना किसी से मांगता।
भक्त ऐसे के पिछे मै जाय फिरता हूँ सदा।
भाव भक्ति प्रेम से जो करत मम गुन गान है।
पास ऐसे भक्त के में जाय रहता हूं सदा।
भजन बिन जो और ना कुछ काम दुनिया का करे।
काज ऐसे भक्त का में जाय करता हूं सदा।
कहत टेऊँ आस तज जो दास बन सेवा करे,
दास ऐसे भक्त का में जाय बनता हूं सदा ।। 14।।

सर्व सम्पति मान त्यागे जो लगा मेरे पिछे,
भक्त ऐसे को न भूखा राखता हूं मैं कभी।
देख अवगुन और का जो ना किसी से कहत है।
भक्त ऐसे का न अवगुण देखता हूँ मैं कभी।।
विपति सम्पत्ति में कभी जो ना भुलाता है मुझे।
भक्त ऐसे को न जग में छोड़ता हूं मैं कभी।
टेऊँ सबसे तोड़ नाता प्रीति जो मुझसे करे।
प्रीति ऐसे भक्त से ना तोड़ता हूं मैं कभी।।15।।

मन बुद्धि जाने न जिसको वाक ना पुनि कह सके।
ब्रह्म सो साकार बनिया खास भक्तों के लिए।
ब्रह्म चेतन सर्व व्यापक अचल अक्रिय जो सदा।
धनुष ले तिस दैत्य कीना नास भक्तों के लिए।
जाति कुल ना नाम जिसका अंग ना आकार है।
रूप नाना धर बना सो दास भक्तों के लिए।
कहत टेऊँ सर्व घट में गुप्त रहता जो सदा।
होय प्रगट सो करत जग वास भक्तों के लिए।।16।।

सोलह- शिक्षाऐं

दोहा: सोलह शिक्षायें सुनो सुखदायक हैं जोय।
कहे टेऊँ संकट कटे देत परम गति सोय।।

शैर: आदि फल विचार के तुम कर पीछे सब काम जी।
ये वचन मन माहिं धारे पाय सुख आराम जी।। 1।।

उद्यम कर शुभ कर्म कारण सीख ये ही सार है।
भाग पर कछु नाहीं राखो वेद ग्रंथ पुकार है।। 2।।

समय का अति कदर करना खोइये न कुसंग में।
जो बचे व्यवहार से सो सफल कर सत्संग में।। 3।।

सर्व से तुम गुण उठाओ दोष दृष्टि को हरे।
देख अवगुण आपना जो बहुत हैं मन मे भरे।। 4।।

सर्व जीवों से करो हित निंद किसकी ना करो।
ना बुरा चाहो किसी का भाव शुद्ध हृदय धरो।। 5।।

जीव किसको ना दुखाओ दया सब पर कीजिये।
राम व्यापक जान सबमें द्वेष को हर लीजिये।। 6।।

समय जोई गुजर जावे याद ना तुम ताहिं कर।
आने वाले वक्त की भी चिन्त मन मे नाहिं कर।। 7।।

जो बनावे ईश्वर तुम तांहिं पर राजी रहो।
जा बनी सा है भली सब यों सदा मुख से कहो।। 8।।

आपने स्वार्थ लिए तुम झूठ ना कब बोलना।
वचन साचा मधुर हो जब तबहीं मुख को खोलना।। 9।।

शरण तेरी आय जोई तांहिं दे सन्मान जी।
यद्यपि वैरी होय तो भी ना करो अपमान जी।। 10।।

और का उपकार कर तुम छोड़ स्वार्थ आपना।
लोक पुनि परलोक में कब होय तुमको ताप ना।। 11।।

धर्म अपने माहिं हरदम प्यार कर नटना नहीं।
सीस जावे जान दे पर धर्म से हटना नहीं ।। 12।।

मौत अपना याद करले तिहं भुलाओ ना कभी।
जान मन में मरण का दिन निकट आया है अभी।। 13।।

धर्मशाला जान जग को जीव सब महिमान है।
मोह किससे ना करो सब स्वप्न सम सामान है।।14।।

वेद गुरु के वचन पर नित तुम करो विश्वास जी।
अटल श्रद्धा धार मन मेंभरम कर सब नास जी।।15।।

आदि मन्तर ले गुरु से जाप जप धर ध्यान को।
जगत बंधन तोड़ विचरो पाय आतम ज्ञान को।।16।।

दोहाः ये शिक्षाएं याद कर मन में पुनि विचार।
कहे टेऊँ करनी करे भव निधि उतरो पार।।

कुण्डली

जब गुरु की कृपा भयी तब जाना निज आप।
तन मन सब शीतल भये मिटे सकल सन्ताप।।
मिटे सकल सन्ताप इस विधि जग को जाना।
ठूठं चोर रज्जु सांप सीप रजत प्रमाना।।
कहे टेऊँ यह जग तजे पाया आतम राम अब।
आनंद भये मन माहिं करी कृपा गुरुदेव जब।। 1।।

आसा करिये एक की और आस दुख रास।
सुत वित मित की आस जो देत काल की फास।
देत काल की फास नरक अग्नि में जारे।
चौरासी लख जोनि के फेर चक्र में डारे।
कहे टेऊँ सुन रे मना जग ते होय उदासा।
और आस सब छोड़के कर इक हरि की आसा।। 2।।

ध्यान धरो हरि का सदा गहो गुरू से ज्ञान ।
थोड़ा जग में जीवना झूठी दुनिया जान।
झूठी दुनिया जान पाप कर्म मत कीजे।
धर्म लिंग दश धार सीस धर्म मे दीजे।
कहे टेऊँ छिन भंग तन तांका तज अभिमान।
काल सीस पर जानके धरो हरी का ध्यान।। 3।।

''इति शुभम''

ओम शांतिः! शांति!!! शांति!!!

:: प्रकाशक ::

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल ट्रस्ट

श्री अमरापुर स्थान, एम.आई.रोड, जयपुर
फोन : 0141-2372424, 23
www.premprakashpanth.com
e-mail : amrapurdarbar@yahoo.com